संजय की कलम से ..

ब्रह्मचर्य और मस्तिष्क का संबंध

विज्ञान के इस युग में कुछेक लोगों ने मानवीय मस्तिष्क की तुलना कंप्यूटर से की है। एक विज्ञानवेत्ता ने कहा है कि मनुष्य का मस्तिष्क जो काम करता है, यदि उन कार्यों के लिए कंप्यूटर बनाया जाये तो उसकी लंबाई-चौड़ाई अमेरिका के एक प्रसिद्ध नगर न्यूयार्क से कम नहीं होगी। फिर उसे सक्रिय करने के लिए उतनी विद्युत शक्ति की आवश्यकता होगी जितनी कि अब न्यूयार्क महानगर में खपती है और साथ-साथ इसके तापमान को बढ़ने से रोकने के लिए न्यूयार्क की हडसन नदी का जितना पानी भी चाहिये होगा। तब भी उस कंप्यूटर में वे सभी योग्यतायें नहीं होंगी जो मानवी मस्तिष्क में हैं। साधारण विवेक भी वैज्ञानिकों की इस बात को मानता है क्योंकि आखिर कंप्यूटर का आविष्कार अथवा निर्माण भी तो मानवी मस्तिष्क ही ने किया है, अत: उसका श्रेष्ठ होना स्वत: ही सिद्ध है।

अब किंचित विचार कीजिये कि न्यूयार्क जैसे विराट नगर जितने क्षेत्रफल वाले कंप्यूटर को बनाने में, उसे क्रियाशील करने में, उसे चालू हालत में बनाये रखने में, उसके लिए आवश्यक विद्युत पैदा करने आदि में कितना धन और कितना श्रम लगेगा? उससे काम लेने के लिए आपरेटरों व इंजीनियरों की ज़रूरत तो रहेगी ही। परंतु कितने आश्चर्य की बात है कि मनुष्य इतने विचित्र मस्तिष्क, जो उसे मुफ़्त में मिला है, का यथोचित मूल्य नहीं समझता! वह अपने अकृत्यों द्वारा शीघ्र ही उसे क्षीण कर देता है अथवा उसे रोगग्रस्त कर बैठता है। यदि मस्तिष्क की उपयोगिता को हम अन्य प्रकार से आंकना न भी जानते हों, तो आर्थिक मूल्य की दृष्टि से भी वह अरबों-खरबों रुपये की चीज़ है। इतना ही नहीं, उसके बिना तो यह तन भी बेकार है और मनुष्य स्वयं भी किसी काम का नहीं है। किंतु आश्चर्य है कि यों तो मनुष्य एक-एक रुपया कमाने तथा बचाने की कोशिश करता है और दूसरी ओर वह इतने बड़े खज़ाने को यूं ही लुटाये चला जाता है!

मनुष्य के मस्तिष्क को मनुष्य स्वयं जो क्षति पहुँचाता है, उनमें से वासना-भोग विशेष है। बहुत से शरीर शास्त्री मानते हैं कि ब्रह्मचर्य को नष्ट करने से मनुष्य के मस्तिष्क को आघात पहुँचता है। कई वैज्ञानिकों का कथन है कि कामाधीन होकर मनुष्य अपने मस्तिष्क के एक अमूल्य द्रव को गंवाता है। इसके परिणामस्वरूप उसके मस्तिष्क की शक्ति का ह्रास होता है। यदि मनुष्य के विचार शुद्ध रहें तो उसका मस्तिष्क प्रतिभाशाली बना रहेगा, उसकी आयु भी बड़ी होगी, उसमें कार्यक्षमता भी बढ़ेगी और वह विचार-कुशल भी होगा। इस सत्यता को जानते हुए मनुष्य को चाहिये कि वह ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करे। ❖

अमृत-सूची

- बलि किसकी *(सम्पादकीय)*.. 2
- पुरानी और पराई बातें.....5
- पुरुषोत्तम संगमयुग और.....6
- 'पत्र' संपादक के नाम..... 9
- अनुभव करो..... 10
- रियलिटी शो 11
- पवित्रता 13
- प्यारे-प्यारे ब्रह्मा.. *(कविता)*. . 14
- गीत की एक पंक्ति ने..... 15
- स्वर्ग में सीट बुक करवा लो.. 16
- जीने का सहारा मिल गया.... 17
- वाणी का रहस्य..... 18
- निन्यानवे का चक्कर..... 19
- अद्भुत किन्तु सत्य..... 21
- दोषी कौन?.....22
- क्षमादान सच्चा समाधान..... 23
- सिम बनाम सोल 24
- जरूरत है रक्षा-कवच की... 25
- संस्कार परिवर्तन 26
- सचित्र सेवा समाचार..... 28
- संगठन चलाने की विधि 30
- प्यार *(कविता)*..... 31
- मिलनसारिता.....32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	75 /-	1,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	75/-	1,500/-
विदेश		
ज्ञानामृत	700 /-	7,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	700/-	7,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383

सम्पादकीय ..✍

बलि किसकी?

भारत में शिक्षा और विज्ञान का काफी प्रचार हो चुका है। कई प्राचीन हानिकारक प्रथाओं से देशवासी मुक्त हैं परन्तु फिर भी कहीं-कहीं अंधश्रद्धा और कुरीतियों के काले दाग-धब्बे अभी भी बचे हुए हैं। पिछले दिनों छत्तीसगढ़ के एक कस्बे चंद्रपुर में माँ चंद्रहासिनी के बहुत प्राचीन मंदिर में यह जानने को मिला कि यहाँ लाखों लोग दर्शनार्थ आते हैं, मनौतियाँ माँगते हैं। साथ-साथ यह भी जानने को मिला कि यहाँ बकरों और भैंसों की बलि दी जाती है। लोगों में यह अंधश्रद्धा है कि ऐसी बलि से देवी प्रसन्न होती है और संतान तथा धन का सुख प्रदान करती है। भारत में अन्यत्र भी ऐसे मन्दिर अभी भी हैं। उन सभी को भी ध्यान में रखकर लेख प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस प्रथा के विरुद्ध जागरूक लोगों द्वारा आयोजित एक सार्वजनिक सभा में यह सवाल उठाया गया, देवी पर अनेक वर्षों से हज़ारों-लाखों मूक पशु चढ़ चुके हैं, क्या सचमुच चढ़ाने वालों की गरीबी मिट चुकी है, क्या सचमुच वे संतान-सुख से लाभान्वित हैं? इसके अनुमोदन में एक भी हाथ खड़ा नहीं हुआ। कुछ लोगों ने यह अवश्य कहा कि बलि देने वाले लोग अधिकतर अशिक्षित और गरीब हैं, बलि से ना शिक्षा में, ना धन में, ना सुख-शान्ति में इज़ाफा हुआ है।

क्या यह गूंगा होने की सज़ा है?

विचारणीय प्रश्न है कि पशु पर यह अत्याचार क्यों किया जाता है? क्या इसलिए कि वह गूंगा है और विरोध नहीं कर सकता? परन्तु आठ-दस मास तक का मानव-शिशु भी तो गूंगा ही होता है, तो क्या गूंगा होने की यही सज़ा है। जो लोग गूंगे बकरे को चढ़ा देते हैं, उसके स्थान पर अपने गूंगे (छोटे-अबोध) बच्चे को रखकर तो देखें, कल्पना मात्र से ही कैसी कंपकंपी आती है? तो क्या जानवर किसी का बच्चा नहीं है? क्या उसे दर्द नहीं होता? क्या वह छटपटाता नहीं है? क्या वह खुशी से बलि हो जाता है? उसके शारीरिक बल पर मानव का बल भारी पड़ता है इसलिए उसे बलि चढ़ा दिया जाता है पर कोई हमसे भी शक्तिशाली हमें दबोच ले तो? फिर बोलने में सक्षम हम मानव यही गुहार लगाते हैं, हे भगवान, आपको दया क्यों नहीं आई? पर दया का अर्थ समझने वाला मानव स्वयं ही दयाहीन हो जाये तो दया का पात्र कैसे बनेगा? **दया का बीज बोए ही नहीं तो दया का फल निकलेगा कैसे?**

दया बिना देवी कैसी?

कहते हैं, देवी प्रसन्न होती है। अजीब तर्क है! **क्या माँ की प्रसन्नता किसी का खून बहाने में हो सकती है? अरे, माँ तो बच्चे के लिए अपना खून बहा देती है पर बच्चे का खून नहीं बहने देगी। देवी तो सभी की माँ है, बकरे की भी माँ है, भैंसे की भी माँ है। सर्व प्राणियों पर दया करने वाली है। दया बिना देवी कैसी?** और फिर देवी का मुँह तो बलिवेदी से विपरीत दिशा में है। इसका भी अर्थ क्या निकला? यही ना कि देवी तो ऐसे कुकृत्य को देखना भी नहीं चाहती पर हम नाम देवी का लेते हैं और स्वाद अपना पूरा करते हैं। इस कुप्रथा की शुरूआत भी ऐसे ही हुई होगी? अवश्य ही किसी स्वाद के लालची व्यक्ति ने कुतर्क रचा होगा। कह दिया होगा कि मुझे सपने में देवी दिखाई दी और बकरे की बलि माँगी। धर्मभीरू लोगों ने बिना सोचे-समझे बात को मान लिया होगा और प्रथा प्रारंभ हो गई होगी।

आजकल कई लोग देवी की मूर्ति को थाली में रखकर उसके नाम पर भीख माँगते हैं। दाती देवी को क्या बना देते हैं! देवी को तो कुछ नहीं चाहिए लेकिन अपनी अकर्मण्यता को छिपाने के लिए देवी का दुरुपयोग करते हैं। ऐसे ही हिंसा और जिह्वा की गुलामी को छिपाने के लिए देवी की दिव्यता को भी आसुरियत के रंग में रंग दिया जाता है।

यह प्राचीन मन्दिर शक्तिपीठ के नाम से प्रसिद्ध है। शक्तिपीठ वो होते हैं जो पार्वती के मृत शरीरांश गिरने से यादगार रूप में स्थापित हुए हैं। प्रश्न यह है कि क्या पार्वती मांसाहारी थी?

यदि इस बात पर कोई भी भारतीय सहमत नहीं है तो उस परम पावन पार्वती देवी के नाम पर ऐसा जघन्य अपराध क्यों?

यह दैवी वृत्ति है या राक्षसी?

भारत के लोग और भारत की संस्कृति दया को मानते हैं। यहाँ चींटियों को आटा डाला जाता है, पक्षियों के पीने के लिए पानी का प्रबंध किया जाता है। यहाँ की संस्कृति यह नहीं कहती कि 'वध करो और जियो'। यहाँ की संस्कृति कहती है, 'जीओ और जीने दो'। छोटे से छोटे जीव चींटी से लेकर बड़े से बड़े प्राणी हाथी तक, सबको जीने का समान अधिकार है। शास्त्रों में राजा शिवि की दयालुता का गायन आता है। उन्होंने कबूतर की जान बचाने के लिए कबूतर के वज़न का माँस अपने शरीर से काटकर बाज के आगे समर्पण कर दिया था। **और यदि आज मनुष्य अपना माँस बढ़ाने के लिए किसी दूसरे का माँस समर्पण करा ले तो यह भारतीय संस्कृति के अनुकूल तो नहीं है, यह दैवी वृत्ति नहीं है, यह स्वार्थी और राक्षसी वृत्ति है।**

निरपराध को दण्ड क्यों?

धर्म का पहला लक्षण है दया। कहा गया है –

दया धर्म का मूल है,
पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया ना छोड़िये,
जब तक घट में प्राण॥

धर्म कहता है, क्षमा करो, पापी और अपराधी पर भी दया करो, उसे सुधरने का मौका दो। जब पापी और अपराधी भी दया के पात्र हैं तो बिचारा जानवर तो निरपराध है। उसने तो न कोई बंदूक चलाई, ना उग्रवाद, ना आतंकवाद में हिस्सा लिया, न ही किसी को सींग-लात से मारा फिर उसे सज़ा किस बात की? न्याय कहता है, अपराधी भले छूट जाये पर निरपराध को दण्ड नहीं मिलना चाहिए। रामायण में प्रसंग आता है, राम ने भरत को शिक्षा देते हुए कहा – **''हे भरत! निरपराध होने पर भी जिन्हें मिथ्या दोष लगाकर दण्ड दिया जाता है, उनकी आँखों से जो आँसू गिरते हैं, वे दण्ड देने वाले के पुत्र, धन, पशु और राज्य का नाश कर डालते हैं।''** तो क्या निरपराध पशु के आँसू नहीं गिरते? क्या उसका कलेजा नहीं फटता? क्या उसकी बद्दुआएँ नहीं निकलती? क्या उसके हृदय में दर्द का समंदर नहीं उमड़ता? और अगर यह सब होता है तो क्या उसके आँसुओं में हमारा धन, पशु, पुत्र नहीं बह रहे हैं?

महंगा पानी और सस्ता खून

भारत में बलि-प्रथा आदिकाल से नहीं थी। द्वापर युग से यह शुरू हुई, तब से भारत शनैः शनैः गरीबी और अभावों की ओर बढ़ता गया। अन्य कारणों के साथ-साथ निरपराध प्राणियों की आह भी बड़ा कारण रही जिसके नीचे दबते-दबते भारत की समृद्धि तिरोहित हो गई है। एक तरफ, पानी की सूखती हुई नदियाँ और दूसरी तरफ प्राणियों के खून की बहती नदियाँ क्या संदेश दे रही हैं? यही ना कि पानी यहाँ महंगा है और खून सस्ता है और **जब खून सस्ता हो जाता है तो चाहे वह आदमी का हो या पशु का, बेरोकटोक बहने लगता है और अपने साथ सारे मानव जगत को बहाकर डुबो देता है।** कर्म के फल से कोई नहीं बच सकता। अकाल-मृत्यु, रोग, दुर्घटना, जल्दी बुढ़ापा, अंगभंग, पागलपन, असाध्य रोग संसार में क्यों बढ़ रहे हैं। बहुत सारी अनहोनियाँ तो जन्मजात हैं। दूधमुँहा बच्चा दुर्भाग्य का पिटारा अपने साथ क्यों ले आता है? कारण यही है कि कर्म मनुष्य का जन्म-जन्म तक पीछा करते हैं।

चमत्कार किसे कहा जाता है?

क्या किसी की गर्दन काट देना चमत्कार है या किसी की कटी हुई गर्दन को जोड़ देना चमत्कार है? यदि हम देवी का चमत्कार सिद्ध करना चाहते हैं तो क्यों न ऐसा प्रचार करें कि इस देवी के दर पर जाते ही लोगों के टूटे हुए हाथ-पाँव जुड़ जाते हैं, कटी हुई गर्दन पुनः लग जाती है आदि-आदि। तोड़ना कोई चमत्कार नहीं होता, यह काम तो विध्वंसकारी, उग्रवादी और कसाई क्षण भर में कर देते हैं। जो कसाई के दरवाज़े पर होता है, वही देवी के दर पर भी हो तो दोनों में अंतर क्या रहा? मंदिर और बूचड़खाने का एक जैसा दृश्य क्या संदेश देता है? एक बार विवेकानन्द विदेश में गये थे तो वहाँ के लोगों ने एक कारखाना दिखाया और कहा,

देखो, हमारा चमत्कार, हम इसमें एक जीवित भैंस को डालते हैं और दूसरी तरफ हड्डियाँ, खून और माँस पल भर में अलग-अलग हो जाते हैं। तब स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, मैं इसे चमत्कार नहीं मानता। मेरी नज़रों में तो चमत्कार तब हो जब आप अलग-अलग हुए खून, माँस और हड्डियों को मशीन में डालकर एक जीवित भैंस बना दें। **जीवन लेना चमत्कार नहीं है, जीवन दे देना चमत्कार है।**

जीने का हक क्यों छीना जाए?

कई कहते हैं कि बकरे, भैंसे किसी काम नहीं आते पर सच पूछो तो बहुत मनुष्य भी ऐसे हैं जो किसी काम नहीं आते। काम आने की बात तो छोड़ो, वे काम बढ़ाते और काम बिगाड़ते हैं। जानवर अगर किसी काम नहीं आता तो किसी को दुख तो नहीं देता लेकिन यहाँ तो ऐसे मनुष्य भी हैं जो समाज में समस्या बढ़ाने के सिवा कोई काम नहीं करते फिर भी सीना तानकर जीते हैं तो फिर जानवरों का जीने का हक क्यों छिना जाये?

सच्ची बलि

वास्तव में बलि चढ़ाई जानी चाहिए काम रूपी भैंसे की, क्रोध रूपी बकरे की और लोभ, मोह, अहंकार रूपी इनके बाल-बच्चों की। ये खतरनाक विकार मानवात्मा का हनन कर रहे हैं। इनकी बलि न चढ़ाने का परिणाम है कि ये दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं और मनुष्य की सुख-शान्ति की बलि ले रहे हैं। जब हम परमपिता परमात्मा शिव द्वारा दिये गये ज्ञान को जीवन में धारण करते हैं तो ज्ञान-स्नान से आत्मा स्वच्छ हो जाती है और ये सभी विकार आत्मा का पीछा छोड़ देते हैं। यही बलि सच्ची बलि है।

स्वाइन फ्लू क्या है?

जब प्राणी हत्या होती है तो शोध कार्यों ने यह सिद्ध किया है कि वातावरण में पीड़ा तरंगें फैल जाती हैं जिनसे भयंकर बीमारियाँ पनप रही हैं। प्रकृति कुपित हो रही है। बाढ़, भूकंप, अनावृष्टि, अतिवृष्टि के रूप में अपना कोप प्रदर्शित करती है। हिंसा चाहे बलि के नाम पर हो या पेट के नाम पर, दोनों ही ग़लत हैं।

आजकल एक नई बीमारी का आतंक मचा है विश्व में। बीमारी का नाम है 'स्वाइन फ्लू'। 'स्वाइन' का अर्थ है 'सूअर' अर्थात् यह 'सूअर-ज़्वर' है। पहले सूअरों को होता था अब मनुष्यों को होने लगा है। इस रोग की प्रतिरोधक शक्ति मानव शरीर में नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे महामारी घोषित कर दिया है। इससे रक्षा के लिए कोई टीका अभी तक नहीं निकला है। टेमीफ्लू नामक एक ही दवाई है, वो भी बाज़ार से गायब हो चुकी है।

इसके कारण क्या हैं?

'मैड काउ' और 'बर्ड फ्लू' की तरह यह भी औद्योगिक मांस उत्पादन कर अधिक पैसे कमाने के लालच का परिणाम है। सुअरों से फैलने वाला रोग कोई नई बात नहीं है। टीनिया सोलियम नामक रोग सुअरों के मांस भक्षण से होता है। इसका जनक एक कृमि है जिसे टेपवर्म (फीता कृमि) कहते हैं। यह कृमि कागज़ की भांति पतला और कई फीट लंबा होता है, सुअर के भीतर पैदा होता है और उसकी आंत से चिपका रहता है। जब कोई स्वस्थ व्यक्ति सुअर का मांस खाता है तो यह संक्रमण कर जाता है। दवाई के इस्तेमाल से फीता-कृमि के मृतप्राय अंश, रोगी के मल द्वारा खारिज होते हैं। लेकिन जब उस मल को सूअर खाता है तो वे अंश सूअर के भीतर पहुँचकर पुन: पोषण पाते हैं और इस प्रकार सुअर के माँस से मनुष्य में और मनुष्य के मल से सूअर में, फीता-कृमि का यह संक्रमण-चक्र चलता रहता है।

आधुनिक काल में, सूअर का मांस पैदा करने के लिए विज्ञान की तकनीक अपना कर बड़ी ही विषम परिस्थितियों में उन्हें पाला और बढ़ाया जाता है। अप्राकृतिक जीवन जीने वाले ये प्राणी अनेक प्रकार की विकृतियों से ग्रसित हो जाते हैं। इसलिए इनका माँस खाने वाले लोग असाध्य रोगों के शिकार हो जाते हैं। स्वाइन फ्लू भी औद्योगिक मांस उत्पादन का परिणाम है। समय रहते चेतिए, शरीर रूपी मन्दिर में अखाद्य मत डालिए, नहीं तो ये रोग बलि देने वाले और हिंसा से हाथ रंगने वाले की ही बलि ले लेंगे।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

पुरानी और पराई बातें भुला दो

• दादी जानकी

मातृ स्नेह में रहम है, सच्चाई है, प्यार है। ब्रह्मा हमारी माँ भी है तो बाप भी है। स्नेह बहुत है, सच्चाई है, उस शक्ति से माँ कल्याणकारी है। वैसे आत्माएँ भाई-भाई हैं पर सेवा में मातृ स्नेह चाहिए। मतलब की बात वह है जो बाबा सुनाता है जिसमें हमारा भी भला और औरों का भी भला है।

मुख से कुछ बोल नहीं रहे हैं, निमित्त मात्र कर्मेन्द्रियों से कर रहे हैं। उसकी दृष्टि-वृत्ति में है कि सबका भला हो। नवीनता क्या लानी है? ज़रा भी साधारणता संकल्प में न हो, स्वच्छता और श्रेष्ठता हो। स्वच्छता तो ऐसी जैसे बीज, उसके अंदर में ताकत है।

पाँच तत्व का जो शरीर है, उसमें आत्मा पवित्र सतोप्रधान बन रही है। पाँच तत्वों के शरीर का ज़रा भी नाम, रूप याद न हो। कहाँ रहती थी, किस धर्म की थी, जैसे अंजान हो गये। मरने के बाद दूसरे जन्म में कुछ याद थोड़े ही है। तो आँखें, बोल-चाल सब बदल जाना चाहिए।

हमारे अंदर भी ऐसी सत्यता हो, स्वच्छता हो। मन बहुत तूफान मचाता है, कभी अपनी बात को राइट सिद्ध करता है। मन, बुद्धि को शान्त होने नहीं देता है, तो अपने लिए समझना चाहिए कि खतरा है। बाबा के सामने जाकर बैठेंगे तो कभी आँसू आयेंगे, कभी कम्पलेन देंगे। शान्त होना जब तक नहीं सीखे हैं तब तक कदम आगे नहीं बढ़ते हैं। भले कितना भी मेहनत करते हैं, पर जैसे कोई पकड़ कर बैठा है या खुद पकड़ के बैठ गये हैं, अपने स्वभाव-संस्कार के वश। स्वभाव अंदर का है। संस्कार बातचीत चलन में है।

अंदर हमारे में ऐसी शक्ति भरी हो जिससे दूसरे भी शान्त हो जायें। अंदर की शान्ति, रीयल शान्ति, परमात्मा से मिली हुई गिफ़्ट की शान्ति। जो बाबा ने कहा वो कर। अरे! भगवान सम्मुख कह रहा है, मैं सोच रही हूँ..। सोच-विचार करने वाली मध्यम क्वालिटी वाली आत्मा है। उत्तम पुरुषार्थी कभी सोचता नहीं है, न किसी को सोचने देता है।

बाकी पुरानी बात, पराई बात अगर मेरे दिल में ज़रा भी है, तो बाबा मुझे मदद नहीं कर सकता। कहेगा अभी तक यह अपनी ही चंचल बुद्धि के अभिमान में है। बाबा की दुआयें और शक्तियाँ अभी ले लो प्यार से, तो बहिश्त हमारे हाथों में है, जो लोग देखें ये स्वर्ग लाने वाली आत्मा है।

सहनशीलता हमारे संकल्प को अच्छा चलाती है। सहनशीलता की

कमी है तो संकल्प कैसे-कैसे चलते हैं। कोई कहती हैं, बड़े संगठन में मैं नहीं रह सकती हूँ, मुझे अकेला रहना अच्छा लगता है। अच्छा अकेला क्या करेंगे? अकेलेपन में कौन-से ऐसे श्रेष्ठ संकल्प आयेंगे? संकल्प को आना है तो अकेले में भी आयेंगे तो सबके बीच में भी आयेंगे। अकेले होंगे तो और ज़्यादा व्यर्थ संकल्प आयेंगे। जब संगठन में आते तो अच्छे हो जाते हैं। क्या अनुभव है? संगठन की मदद है बहुत। बाकी अकेला माना एकांत का पुरुषार्थ हरेक को अपना करना है, उसमें दो इकट्ठे एक जैसा कर नहीं सकते तो इसमें सरलता से काम लेना होता है। शुभचिंतक भले रहो पर अपनी संभाल के लिए पहले अपने लिए शुभचिंतन में रहो। बाबा तो मुरली में पर्सनल हम बच्चों को समझाता है, मुरली से बड़ा अच्छा चिंतन चलता है। ❖

गतांक से आगे ..

पुरुषोत्तम संगमयुग और शिव परमात्मा के परमशिक्षक रूप के दिव्य कर्त्तव्य

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

हमारे विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में ज्ञान क्रमबद्ध तरीके से दिया जाता है और इसी कारण 10-12 साल पढ़ाई पढ़ने में देने पड़ते हैं। मुंबई में जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य पधारे थे। हम तीन भाई उनसे मिलने गये थे। हमने स्वामी जी से पूछा, ये चार वेद सत्य हैं लेकिन इन्हें दुनिया के सामने कैसे सत्य सिद्ध करें? तब शंकराचार्य महाराज ने कहा, जैसे 'चार' (गिनती) सत्य है, ऐसे चार वेद सत्य हैं इसलिए चार वेदों को सत्य सिद्ध करने की ज़रूरत नहीं है। मैंने बड़े प्रेम से उन्हें कहा कि अगर कोई 'चार' असत्य है, ऐसा सिद्ध करे तो आप चार वेद असत्य हैं, यह मानने के लिए तैयार होंगे? तो उन्होंने कहा, मैं जरूर मानूँगा। तब मैंने स्वामी जी को कहा कि 1960 के दशक में रशिया में गणित शास्त्र के विद्वानों की कॉन्फ्रेंस हुई थी और उसमें सबसे पहले नंबर का पेपर सबने मान्य किया, उसके द्वारा यह सिद्ध हुआ कि गणित कई बार सत्य भी है तो कई बार मान्यता भी है *(Arithmatic is sometimes scientific and sometimes based on beliefs)*। स्वामी जी ने पूछा, इसमें मान्यता की क्या बात है? मैंने कहा, जो सिद्धांत मास्को में बताया गया है, उसे सरल भाषा में मैं आपको बता रहा हूँ। ऐसा कहकर मैंने स्वामी जी से पूछा, एक के बाद क्या आता है? स्वामी जी ने कहा, दो। फिर मैंने पूछा, अच्छा, दो के बाद क्या आता है? स्वामी जी ने कहा, तीन। आगे पूछा, तीन के बाद क्या? स्वामी जी ने कहा, चार। फिर मैंने कहा, जो आपने कहा, दो, तीन, चार, यह मान्यता भी हो सकती है, सत्य भी, मान्यता इसलिए कि एक के बाद दो नहीं आता क्योंकि एक और दो के बीच सवा, डेढ़.. जैसी बहुत-सी संख्यायें हैं। आज तो कैंसर जैसे महारोग के एक का आठ लाखवां भाग बैक्टीरिया भी विज्ञान ने ढूँढे हुए हैं। अत: एक के बाद दो का आना, यह मान्यता है, सत्य नहीं है। तब शंकराचार्य जी ने कहा कि यह तो हमने पहली बार सुना कि गणित शास्त्र भी मान्यता है, सत्य नहीं है अर्थात् शंकराचार्य जैसे व्यक्ति को भी दुनिया में मान्यताओं में जो परिवर्तन होता है, उनका ज्ञान नहीं था। परन्तु परमपिता परमात्मा ने परमशिक्षक के रूप में धीरे-धीरे हमारी बुद्धि को परिवर्तित कर हमारे जीवन को श्रद्धायुक्त और दैवीगुणसंपन्न बनाने का मार्गदर्शन दिया। एक ट्रेन भी जब पटरी बदलती है तो ठका का आवाज़ होता है। लेकिन परमशिक्षक के रूप में परमपिता परमात्मा ने 73 वर्षों के लंबे अरसे में हमारी मान्यताओं में जिस तरह से परिवर्तन कराया उससे ठका का आवाज़ भी नहीं हुआ जिसके लिए हमारी दादी प्रकाशमणि जी कहती थी कि मक्खन से बाल निकल गया।

यहाँ, ज्ञानामृत में पहले लिखी हुई बात दोहराना चाहता हूँ जिससे परमात्मा का परम शिक्षक के रूप में जो कर्त्तव्य चला, उसकी महानता व दिव्यता को हम स्वीकार करें। चौदहवीं सदी में जर्मनी के मार्टिन लूथर और उनके साथियों ने ईसाई धर्म की अनेक प्रकार की त्रुटियों को विश्व के सामने प्रसिद्ध किया, परिणामरूप, लोगों की ईसाई धर्म के रोमन कैथोलिक चर्च में श्रद्धा कम हो गई। मार्टिन लूथर ने प्रोटेस्टेण्ट रूपी ईसाई धर्म की नई शाखा शुरू करने का फैसला किया परन्तु नई विचारधारा के ऊपर लोगों की श्रद्धा निर्माण करने में वे असफल रहे। इसका परिणाम यह निकला कि श्रद्धाशून्य, नास्तिक और

भौतिकवादी समाज बन गया। कारण यही है कि मार्टिन लूथर आदि ने तर्कसंगत रीति से धीरे-धीरे नये विचारों के ऊपर लोगों की श्रद्धा नहीं बिठाई जिससे क्रांति हुई और क्रांति के द्वारा कभी भी चरित्रवान समाज का निर्माण नहीं हो सकता।

शिव बाबा ने पुरानी धर्म की बातों से हमारा बुद्धियोग हटाकर नये ईश्वरीय ज्ञान की बातों में बुद्धियोग लगवाया जिससे हमारे में से किसी के अंदर भी नास्तिकवाद और भौतिकवाद का निर्माण नहीं हुआ, यह हकीकत है। ऐसे परमात्मा का परम शिक्षक के रूप में यह कितना श्रेष्ठ कर्त्तव्य है, ऐसा मैं समझता हूँ।

दूसरा भी एक मिसाल है। ईश्वरीय ज्ञान लेने से पहले मैं भक्ति मार्ग की एक गीता पाठशाला का नियमित विद्यार्थी था। वहाँ के मुखिया को हम शास्त्री जी या दादा कहते थे। वे शास्त्री जी दादी प्रकाशमणि जी और दादी रतनमोहिनी जी से, जापान में दस दिन की वर्ल्ड रिलीजियस कॉन्फ्रेंस के सिलसिले में संपर्क में आये थे और उन्हें शिव बाबा का परिचय था। वे श्रावण मास में विशेष व्याख्यान माला करते थे। एक वर्ष उन्होंने श्रावण मास में महाभारत के पात्रों के ऊपर प्रवचनमाला का आयोजन किया था। भीष्म पितामह और गुरु द्रोणाचार्य के बारे में उन्होंने कहा कि द्रौपदी वस्त्रहरण के समय ये दोनों महारथी चुप बैठे रहे, सत्ता के दास बनकर साक्षी भाव से देखते रहे, दुशासन को नहीं रोका।

प्रवचन समाप्त होने के बाद मैंने शास्त्री जी से कहा, आज आपने भीष्म पितामह और गुरु द्रोणाचार्य की प्रतिभा का खंडन किया है परन्तु आपने तो हमें सिखाया है कि महाभारत में द्रौपदी वस्त्रहरण हुआ ही नहीं है। आठवीं सदी में भट्टनारायण नाम के एक नाट्यकार ने 'वेणी संहारम्' नाटक में द्रौपदी वस्त्रहरण की बात लिखी है, अगर यह हकीकत है तो फिर आपने क्यों इन दोनों महारथियों के साथ अन्याय किया? तब शास्त्री जी ने बहुत सुन्दर सनातन सत्य मुझे समझाया कि लोग मानते हैं कि द्रौपदी वस्त्रहरण हुआ और लोगों की मान्यता को तोड़ने या उसे परिवर्तन करने का मुझे कोई हक नहीं है। अगर मैं उनकी पुरानी मान्यता में परिवर्तन नहीं ला सका तो भौतिकवाद और नास्तिकवाद का प्रादुर्भाव उनके जीवन में हो जायेगा और भविष्य इसके लिए मुझे ही ज़िम्मेवार ठहरायेगा। तब मैंने शास्त्री जी से कहा कि आप तो ब्रह्माकुमारीज़ को जानते हैं और ब्रह्माकुमारीज़ में पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करके नई मान्यताओं में श्रद्धा बिठाने का श्रेष्ठ प्रयोग हो रहा है तब उन्होंने कहा, मैं जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि यह परिवर्तन भगवान ही करा सकता है। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन सिर्फ परमात्मा ही करा सकता है।

इस प्रकार परमात्मा शिव ने परमशिक्षक के रूप में पुरानी मान्यताओं में इस तरह से परिवर्तन कराया कि हममें से कोई भी नास्तिक नहीं बना, न हममें भौतिकता आई बल्कि उसके बदले में दैवी गुणों का सिंचन हमारे जीवन में कराया, पवित्रता जैसा महान व्रत धारण कराया और ईश्वरीय सेवा के प्रति अपना जीवन समर्पित कराया। इसीलिए परमात्मा के परमशिक्षक के रूप में कर्त्तव्य को समझना जरूरी है, नहीं तो यही प्रश्न उठेगा कि सारा ज्ञान एक साथ परमात्मा ने क्यों नहीं दिया।

इसी बात पर मैंने एक प्रयोग किया। मुंबई में एक रोटरी क्लब में मुझे प्रवचन के लिए बुलाया गया। मैंने समझा, रोटरी क्लब में तो सब पढ़े-लिखे विद्वान होते हैं तो क्यों न मैं सारा ही ईश्वरीय ज्ञान संक्षिप्त रूप में उनको आधे घंटे में सुना दूँ। जब मैंने आधे घंटे में सारा ज्ञान संक्षिप्त रूप में सुनाया और बाद में सवाल पूछा तो किसी को कुछ भी समझ नहीं आया, कारण यही था कि जब तक ज्ञान की बात जीवन में धारण नहीं करते तब तक उसकी पूरी समझ नहीं आती। शिवबाबा ने ज्ञान की पूरी समझ हमारे में आ जाये इसी कारण धारणा का विषय मुख्य रखा है। अत: मेरी अपने

दैवी परिवार से नम्र विनती है कि शिव बाबा के परम शिक्षक रूप के दिव्य चरित्रों को समझने की कोशिश करें, नहीं तो जो जैसा चाहेगा, ऐसा ज्ञान देना शुरू कर देगा और लोगों को ज्ञान के बारे में अनेक प्रश्न उत्पन्न होते रहेंगे।

मिसाल के तौर पर रामायण की प्रचलित बात है कि श्री रामचंद्र जी ने धोबी की बात सुनकर सीता जी को वनवास भेज दिया। परंतु अभी गुजरात के एक विद्वान ने ऐसा लिखा है कि श्री रामचंद्र जी के राज्याभिषेक के बाद एक दासी ने राम को बताया कि श्री सीता जी माँ बनने वाली हैं। यह सुखद समाचार सुनकर श्री रामचंद्र ने दासी को कुछ भेंट देने की कोशिश की पर दासी ने इंकार कर दिया। रामचंद्र जी ने बड़ी भेंट देनी चाही पर दासी ने उसे भी स्वीकार नहीं किया और कहा, समय आने पर आपसे सौगात ले लूँगी।

एक रात, सोने के समय दासी ने श्री राम को कहा, आप मुझे अभय वरदान दें तो मैं सौगात माँगूँ। रामचंद्र जी ने अभय वचन दिया तब दासी ने लक्ष्मण जी को बुलाने को कहा। लक्ष्मण जी पधारे तब दासी ने लक्ष्मण जी को कहा कि आपने सीता जी के पाँवों के नूपुर ही देखे हैं, और किसी जेवर को नहीं देखा है पर आज आप सीता जी को पूर्ण रूप से देख लीजिये क्योंकि आगे चलकर आपको सीता जी के साथ शादी करनी पड़ेगी। यह सुन लक्ष्मण जी को बहुत क्रोध आया और वे दासी का वध करने आगे बढ़े तब दासी ने श्री रामचंद्र से कहा, आपने अभय वरदान दिया है, मुझे बचाइये। श्री रामचंद्र जी ने लक्ष्मण का क्रोध शांत किया, फिर दासी से पूछा कि श्री सीता क्यों लक्ष्मण की पत्नी बनेगी? दासी ने कहा, यह तो रघुकुल की रीत है, आपने बाली का वध करके, तारा की शादी सुग्रीव से कराई जबकि बाली-पुत्र अंगद बहुत बड़ा हो गया था। इसी प्रकार, रावण का वध करके मंदोदरी की शादी उनके अनुज विभीषण से कराई जबकि मंदोदरी को भी मेघनाथ जैसे बड़े बच्चे थे। आप भी बड़े भाई हैं, आपके मरने के बाद सीता की शादी भी रघुकुल की इस रीत प्रमाण लक्ष्मण के साथ करानी ही पड़ेगी। चाहे वे दोनों नारियाँ वानर जाति की थी या राक्षस जाति की थी फिर भी आपने नारी जाति के मान को ठेस पहुँचाई है।

श्री राम को अपनी गलती का अहसास हुआ। अगले दिन वे वशिष्ठ मुनि के पास गये। वशिष्ठ मुनि ने कहा, दासी की बात सही है, तुमने नारी जाति का मान भंग किया है इसलिए तुमको सज़ा होनी ही चाहिए और इसी कारण तुमको सीता को वनवास भेजना पड़ेगा। उसके बाद गर्भवती सीता को लक्ष्मण के द्वारा वनवास भेजने का कर्त्तव्य रामायण में हुआ। ऐसा गुजरात के प्रसिद्ध विद्वान ने लिखा है। अब आप बताइये, प्रचलित मान्यताओं में क्या इतना फर्क हम कर सकते हैं जो इन लेखक महाशय ने किया।

इस प्रकार से धर्म-शास्त्रों के पात्रों में अगर सामान्य लेखक परिवर्तन करता है तो जनता का आक्रोश उसके प्रति हो सकता है। शिव बाबा ने 73 वर्षों में ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर देश-विदेश के भाई-बहनों में जो भी परिवर्तन किया है, वह कितना प्रशंसनीय है! दादी जानकी ने एक बार कहा, रमेश, भारत में तो ईश्वरीय सेवा करना आसान है क्योंकि यहाँ राम कौन, कृष्ण कौन, सब जानते हैं परंतु विदेश में तो धर्म, मान्यतायें, संस्कृति, विचार अलग होते भी उनके मन में बाबा के ज्ञान के प्रति श्रद्धा निर्माण करना, कोई मामूली कर्त्तव्य नहीं है। मैं भी आदरणीया दादी जानकी से सौ प्रतिशत सहमत हूँ और इसलिए ही सबको कह रहा हूँ कि परमात्मा के परमशिक्षक के रूप के कर्त्तव्यों की दिव्यता और महानता को हम सब समझें और अगर हम समझ लेंगे तो जो प्रश्न हमने ऊपर लिखा है, उसके जो विविध पहलू हमारे सामने आ रहे हैं, वे नहीं आयेंगे। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

'ज्ञानामृत' पत्रिका ज्ञान के हीरे, पन्नों से भरी पड़ी है। अगस्त 09 अंक में लघु नाटिका 'कर्मों का साक्षात्कार' बहुत अच्छी लगी। इससे हमारे जैसे वरिष्ठजनों (senior citizens) को ज़रूर नसीहत मिलेगी।

– शाम लाल गुप्ता, धुरी

अगस्त 09 अंक में 'स्वतंत्रता और स्वच्छंदता' लेख पढ़ा। स्वतंत्रता मानवीय जीवन का उत्कर्ष करती है, स्वच्छंदता से मानव जीवन अनियंत्रित एवं पराधीन हो जाता है। ऐसी सुन्दर-सुस्पष्ट समीक्षा से उत्साह से युक्त संयमी कर्मयोगी जीवन की प्रेरणा प्राप्त होती है। 'पत्र संपादक के नाम' में 'भीख देनी चाहिये या नहीं', प्रश्न के उत्तर में भीख एवं सहयोग के अन्तर की जो विशद व्याख्या की गई है, हृदयग्राही है। भीख मानव जीवन की प्रवृत्ति हो जाने पर अकर्मण्य बनाती है एवं समाज को पतन की ओर ले जाती है वहीं पर निर्बल, असहाय का सहयोग कर उसे स्वावलंबी आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। भीख मांगना एवं देना दोनों पाप कर्म हैं। सुपात्र को सहयोग देना पुण्य है।

– बंशलाल सचान,
कोड़ा जहानाबाद (फतेहपुर)

सितंबर 09 अंक में 'छद्म बंधुआ मजदूरी' पढ़ा, बड़ा आनन्द आया। ऐसी समझानी बराबर मिलती रहे तो लोगों की समझ बढ़ेगी। मुझे बहुत अच्छी लगी। माया सब सुविधायें देने के बाद शान्ति को अपने पास रख लेती है। यह तो ठीक नहीं है। मनुष्य सुख-शान्ति खोजता रहता है। मेरे को तेरे में बदल दिया जाये तो सर्व का भला हो जाये। समझाने के लिए दोनों दृष्टांत बहुत अच्छे हैं। ज्ञानामृत ज्ञानवर्धक पत्रिका है।

– ब्र.कु. बाबूराम, चिरकुण्डा

समस्त ब्राह्मण परिवार की मनभावन पत्रिका 'ज्ञानामृत' की लोकप्रियता केवल इस परिवार तक सीमित न रह गई है। यह बाहर के बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा भी पसंद की जा रही है। रुड़की में इस पत्रिका के 125 सदस्य सेवाकेन्द्र पर आने वाले विद्यार्थी हैं जबकि 105 सदस्य संबंध, संपर्क वाले हैं। सितंबर 09 अंक में 'छद्म बंधुआ मजदूरी' जहाँ जीवन की कड़वी सच्चाई को उजागर कर, स्थूल धन की कमाई के साथ-साथ उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण पारिवारिक संबंधों की मिठास, मन की शान्ति और सुकून को न गंवाने की प्रेरणा देता है वहीं 'जीवन को प्रयोगशाला बनायें' बहुमूल्य लेख बताता है कि कलियुग की देन, अनेकानेक समस्याओं से धैर्य के साथ निपटने के लिए योग की शक्ति, परमात्म शक्ति, श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति व स्वमान की शक्ति को जीवन में यथार्थ विधि से प्रयोग करें तो असंभव लगने वाली समस्याओं को भी समाप्त कर सकते हैं।

'युवाओं का आह्वान' रचना युवाओं को संकुचित मानसिकता से ऊपर उठने, निरर्थक बंधनों की जंजीरों को तोड़ फेंकने, वर्तमान समय की बेहद की ज़िम्मेवारियों को समझने, सुप्त शक्तियों को पहचानने और महावीर हनुमान की भाँति विकारों रूपी रावण की कैद से करोड़ों आत्माओं रूपी सीताओं को मुक्त कराने के राम के सर्वश्रेष्ठ कार्य में अथक रूप से जुट जाने की प्रेरणा प्रदान करती है।

'सुखमय परिवार' में परिवारों के टूटने-बिखरने के कारणों का बोध कराने के साथ-साथ उनके अति उत्तम तथा सरल निवारण भी सुझाये हैं जिन पर अमल करने से सौहार्दपूर्ण वातावरण परिवारों में पुन: कायम हो सकता है।

पत्रिका के सभी जागरूक सदस्यों से अनुरोध है कि वे इसे पढ़ने के पश्चात् यथासंभव, अपने संबंध-संपर्क में आने वाले भाई-बहनों को भी देकर उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करने की कृपा करें। आपके इस प्रयास से अन्य अनेक आत्माओं को भी अज्ञान रूपी घोर अंधकार में सत्य ज्ञान सोझरे की किरणें प्राप्त हो सकेंगी।

– ब्र.कु. के.एल.छाबड़ा, रुड़की

अनुभव करो ..

• परमिंदर ढींगरा, सत्कार भवन, दिल्ली

ओ चो, तुम कौन हो, तुमने इस धरती पर जन्म किसलिए लिया? जब भगवान ने तुम्हें तुम्हारी स्मृति दिलाई, उसी दिन से दुनिया तुम्हारे लिए पराई हो गई। अपनी आत्मिक पहचान पाते ही देह के संबंधी पीछे छूट गये। क्यों? क्योंकि वो तो मनुष्य ही बने रहे और तुम मानव से ऊपर उठकर देवता बनने के पुरुषार्थ में लग गये।

ईश्वरीय मार्ग पर चलते हुए मजबूरी कैसी? क्या प्रभु के महावाक्यों पर विश्वास नहीं? यदि है तो मजबूरी कैसी? मजबूरी शब्द जन्म देता है कमज़ोरी को। आज यदि अपने को मजबूर समझोगे तो कल यही तुम्हारी कमज़ोरी बन जायेगी।

उदास क्यों? मजबूर क्यों? सिर्फ इसलिए कि आगे कुछ दिखता नहीं, अंधेरे में तीर मार रहे हो तो क्या अभी तक कोई अनुभव नहीं किया? क्यों नहीं अपने अंदर जिस भी रिश्ते की कमज़ोरी हो, उसे उससे प्राप्त करो।

वो दिखता नहीं लेकिन महसूस तो होता है। उसका कंधा नहीं मिला तो क्या, वो रोने ही कहाँ देता है? उसकी छत्रछाया मनुष्यों की छत्रछाया से बहुत ऊपर है।

यदि तुम किसी एक देहधारी के ना होकर, सबके अपने हो गये हो तो क्या यह भाग्य की लकीर की उज्ज्वलता नहीं? यदि है तो अपना लो उसे, अपना बना लो, उसके बन जाओ, वो वही शिव है जिसकी तुम पार्वती हो। उसकी भी तो सोचो। वो पाँच हज़ार साल तक तुम्हारा इंतज़ार करता है। तुम तो प्रथम जन्म पाते ही उसे भूल जाते हो। वो सर्वज्ञ होने के कारण ऊपर बैठा तुमसे मिलने की राह तकता है। कितना तड़फता होगा जब तुम्हें नीचे गिरते देखता होगा! लौकिक में एक पति अपनी पत्नी को किसी के साथ नहीं देख सकता। यहाँ वो कितने जन्म तुम्हें कितने संबंधों में देखता होगा और जब तुम्हें मिलता है तो कितना प्यार वो लुटा देता है कि उस प्यार में तुम पाँच हज़ार वर्ष की तड़प को आसानी से देख सकते हो। तुम्हें अपने में समा लेना चाहता है। जानता है, फिर बिछड़ोगे तो पाँच हज़ार साल के लिए। किसका दर्द बड़ा है? क्या उस परम प्यार के लिए, तुच्छ सांसारिक प्यार को नहीं छोड़ सकते? वो प्यार, वो अनोखा प्यार, ऐसा दिव्य माशूक तो एक ही बार मिलेगा, क्या इस आशिकी में कोई उमंग नहीं जागती? नहीं जागती तो जगाओ उसे अपने अंदर। याद करो, तुम एक देवी हो, तुम्हारा प्रियतम प्रभु आ गया है, पार्वती का शिव आ गया है। पार्वती शिव के बिना संपूर्ण बन नहीं सकती। आत्मा रूपी सीता, राम के बिना अधूरी है।

मीरा की भक्ति को याद करो, वह एक मूर्ति की दीवानी थी, उसने जड़ के लिए चैतन्य को ठुकरा दिया। तुम क्या चैतन्य के लिए इस जड़ जैसी दुनिया से उपराम नहीं हो सकते? जड़ इसलिए कि सब आत्मायें इस वक्त आत्म-स्मृति में नहीं, देह के भान में है, देह तो एक जड़ वस्तु है।

तुम जिस देहधारी से प्यार का दम भरते हो, तुम उससे तो प्यार ही नहीं कर रहे क्योंकि वो जो असल में है, उस तक तो तुम्हारी पहुँच है ही नहीं। मूल स्वरूप को तो तुमने कभी प्यार किया ही नहीं। इसलिए भगवान कहते हैं, मुझे याद करो, अनुभव करो मेरे प्यार को, अनुभव करो उस दुनिया का जो मैं तुम्हारे लिए बना रहा हूँ। ❖

मन का वशीकरण

मन के वश होने से तात्पर्य यह है कि मन में केवल वही संकल्प उठें जो मनुष्य को सद्मार्ग पर ले जाने वाले हों। मन बुरे संकल्प अर्थात् विकल्प करना छोड़ दे, अशुद्ध संकल्प मन में आएँ ही नहीं, इसको ही मन पर जीत प्राप्त करना कहा जाता है। जैसे घोड़े को वश करने का अर्थ यह नहीं कि वह दौड़ना बंद कर दे, वह दौड़े बेशक परन्तु जिस ओर मालिक ले जाना चाहे वह उस ओर ही जाए, मनमाने मार्ग पर नहीं। मन रूपी अश्व के लिए विकारी मार्ग ही कुमार्ग है। जीवन की राह में मनुष्य के लिए विकार ही गड्ढे हैं जिनमें गिरने से उसे दुख तथा अशान्ति रूपी चोटें खानी पड़ती हैं।

रियलिटी शो

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

आजकल टीवी पर रियलिटी शो आयोजित किये जाते हैं। ये विभिन्न प्रकार के होते हैं और विभिन्न चैनलों पर आयोजित हो रहे हैं। इनमें से कुछ में फिल्मी कलाकारों की डांस प्रतियोगिता, कुछ में स्टंट (खतरों से भरे हुए) दृश्यों की प्रतियोगिता और कुछ में कलाकारों की निजी ज़िन्दगी को कुरेदने वाले (बेहद प्राइवेट किस्म के) सवाल पूछे जाते हैं। कलाकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सच बोले। सवाल चाहे कितना भी व्यक्तिगत ज़िन्दगी से संबंधित हो पर कलाकार को इनाम उसके बेबाक सच के आधार से ही मिलता है। सच को परखने के लिए झूठ पकड़ने वाली एक शक्तिशाली मशीन (लाई डिटेक्टर) लगाई जाती है जो चेहरे के हाव-भाव और बॉडी लैंग्वेज को बारीकी से रिकॉर्ड करती है और सच्चे परिणाम दिखाती है। इसका निर्णय करने वाले न्यायाधीश भी फिल्मी दुनिया के ही होते हैं। जो कलाकार, निजी जीवन से जुड़े ऐसे रहस्य भी, प्रश्नों के उत्तर में बिना घबराए खोलते हैं जिन्हें उनके करीबी रिश्तेदार भी नहीं जानते होते, वे करोड़ों का इनाम पा जाते हैं।

किस ओर ले जा रही है नवीनता की चाह?

नवीनता की चाहना मनुष्य में प्राचीन काल से रही है। नया-नया देखने, नया-नया जानने, नया-नया सुनने की इस मानवीय प्रवृत्ति को संतुष्ट करने के लिए टी.वी. की स्क्रीन पर नित नये दृश्य आते रहते हैं लेकिन अब तो कलाकार, निजी जीवन की अंतरंग बातों को सार्वजनिक करके ही नवीनता की प्यास को बुझाने की कोशिश कर रहे हैं। प्यास बुझाने के इस प्रयास का परिणाम कलाकार, दर्शक या अन्य किसी के लिए भी कल्याणकारी नहीं सिद्ध हो रहा है। रियलिटी शो देखकर अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रख सकने में असमर्थ, आत्महत्या करने वालों के समाचार, समाचार-पत्रों में छपते रहते हैं। फिर भी नवीनता की चाह में बँधा मानव सब हदों को तोड़ रहा है।

क्या है मानव जीवन का सच?

रियलिटी का अर्थ होता है वास्तविकता अर्थात् सच, जो चीज़ जैसी है वैसी ही उसे दिखा देना। प्रश्न उठता है कि मनुष्य की वास्तविकता क्या है, उसके जीवन का सच क्या है? किसी भी मानव का जन्म होना माना इस सृष्टि रूपी बेहद की स्क्रीन पर एक नये कलाकार का आगमन। जब यह कलाकार अपने घर परमधाम से चला तो एक प्रकाश का कण, एक ज्योति के बिन्दु के समान रूप वाला ही था पर अभिनय करने के लिए उसे कपड़ा (शरीर) पहनना पड़ा। चूंकि इसका अभिनय चौबीस घंटे चलता है इसलिए इसे शरीर रूपी कपड़े को हर समय पहने रहना पड़ता है जबकि अल्पकाल के कलाकार, कुछ घंटे के शो के समय अभिनय के वस्त्र पहनते हैं और फिर उतार देते हैं। शरीर रूपी कपड़ा पहने इस ज्योतिबिन्दु आत्मा के निजी अस्तित्व से जुड़ी सच्चाइयाँ ही वास्तविक रियल्टी शो हो सकती हैं और निज के सत्य स्वरूप से जुड़े प्रश्न ही वास्तव में पृष्टव्य (पूछने योग्य) प्रश्न हो सकते हैं। निजी अस्तित्व से जुड़े ये प्रश्न, जिनसे सर्व गुप्त सच्चाइयाँ सामने आ जाती हैं, इस प्रकार हैं –

1.शरीर रूपी कपड़े को पहन अभिनय करने वाले आप कौन हैं?

2. इस कपड़े के नष्ट हो जाने पर आप कहाँ जायेंगे?

3. शरीर रूपी कपड़े को धारण करने से पहले आपका रंग-रूप कैसा था?

4. इस कपड़े को पहनने से पहले आपका निजी स्थान कहाँ, कौन-सा और कैसा था?

5. इतने बड़े शरीर में आप अभिनेता कहाँ बैठकर शारीरिक क्रियाओं का संचालन करते हैं?

6. सृष्टि रंगमंच पर आपके अभिनय का निर्देशक कौन है?

7. जब आप ज्योतिबिन्दु रूप में अभिनय करने रंगमंच पर आये तो आपके साथ कौन आया था और वापसी में कौन साथ जायेगा?

8. अन्य अभिनेताओं से आपका क्या संबंध है?

9. क्या आप ही परमात्मा हैं या आप परमात्मा से भिन्न हैं?

10. मानव शरीर के नष्ट हो जाने के बाद क्या आपको पुन: मानव शरीर ही मिलता है या अन्य योनियों में जाना पड़ता है?

11. रंगमंच पर आपको अधिक से अधिक और कम से कम कितना समय पार्ट बजाना पड़ता है?

12. शरीर रूपी कपड़े से भिन्न आप आत्मा के मूल गुण कौन-कौन से हैं?

13. आपके कर्मों के आप स्वयं ज़िम्मेवार हैं या परमात्मा या कोई नहीं?

14. आपके अभिनय का आदि-मध्य-अंत क्या है?

15. क्या आप अभिनय करते थकते भी हैं, यदि हाँ तो पुन: सशक्त होने का तरीका क्या है?

16. क्या आप आत्मा का कोई डुप्लीकेट है?

17. आपके अभिनय की विभिन्न अवस्थाएँ कौन-कौन सी हैं?

18. मन-बुद्धि और संस्कार से आपका क्या संबंध है?

19. आप जो ड्रामा कर रहे हैं, उसका हीरो कौन है?

20. आपके अभिनय-जीवन के उत्थान-पतन की घटनाएँ बताइये?

सर्वोच्च इनाम

इन रियल प्रश्नों का उत्तर देने वाला पाता है सर्वोच्च इनाम। वह इनाम है विश्व की निर्विघ्न बादशाही का। देने वाला है स्वयं परमपिता परमात्मा। इन प्रश्नों के उत्तर से जो रियल्टी सामने आती है वो ऐसी है जिससे उत्तर देने वाले का, उत्तर सुनने वाले का और पूछने वाले का, तीनों का ही कल्याण हो जाता है। टीवी पर चल रहे किसी भी हद के रियलिटी शो की भेंट में स्वयं परमात्मा पिता द्वारा उद्घाटित उपरोक्त सच्चाइयों के आधार पर चल रहा वर्तमान रियलिटी शो बड़ा विशाल और बेहद का है। ब्रह्माकुमारीज़, आबू पर्वत और उससे चल रही 8,500 शाखाओं में प्रतिदिन यह रियलिटी शो होता है। सृष्टि के 650 करोड़ लोगों में से कोई भी इसमें भाग ले सकता है। उपरोक्त प्रश्नों के अलावा भी ज्योतिबिन्दु आत्मा के निजी अस्तित्व से जुड़ी और परमात्मा पिता तथा उनकी रचना की बहुत सारी सच्चाइयाँ इस शो में देखने और जानने को मिलती हैं और बदले में जो इनाम मिलता है, उसमें शामिल है वर्तमान जीवन की शान्ति और सुकून तथा भविष्य 21 जन्मों की सौ प्रतिशत सुख, शान्ति और समृद्धि की गारंटी।

रियलिटी शो देखने का हार्दिक निमंत्रण

टीवी का शो तो एक प्रकार का शारीरिक खुलापन है। इससे तो रियलिटी (आत्मज्ञान अर्थात् सृष्टि चक्र में आत्मा के जन्मों और कर्मों की कहानी तथा परमात्मा से उसके सर्व संबंधों की जानकारी) को जानने के बजाय लोग उससे दूर हो जाते हैं, अधिक देह-अभिमानी बनते हैं। शरीर रूपी कपड़े की जकड़ में और ज़्यादा जकड़े जाते हैं। कुछ धन पाकर अल्पकाल की खुशी तो अवश्य मिल जाती है लेकिन निजी ज़िन्दगी की भूलें, कपट, धोखा, अवैध कर्म आदि को उजागर करते समय मानसिक पीड़ा भी झेलनी पड़ती है। यह तो ऐसे ही है जैसे पीड़ा पीकर पैसा मिला। दूसरी तरफ ईश्वर द्वारा जिन रियलिटीज़ का शो हो रहा है, वे आदि-अनादि सत्य हैं। शरीर धारण करने से पहले के सत्य और शरीर छोड़ने के बाद के सत्य भी इनमें शामिल हैं जिन्हें जानकर मनुष्य जन्म-जन्म की पीड़ाओं को भूल सच्चा सुकून पा लेता है। आप सबको हार्दिक निमंत्रण है ब्रह्माकुमारीज़ केन्द्रों पर परमात्मा द्वारा आयोजित नि:शुल्क रियलिटी शो देखने का और अपनी रियलिटी जानने का। ❖

अपना चेहरा ज्ञान दर्पण में देखो, न कि कांच के दर्पण में

गतांक से आगे..

पवित्रता

• ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में, 'पवित्रता, अध्यवसाय (दृढ़तापूर्वक कार्य में लगना) और धैर्य – इन तीन गुणों से सफलता मिलती है और सर्वोपरि है 'प्रेम', भाव यह है कि संस्कारों में हो पवित्रता, कर्म के प्रति हो लगनशीलता, फल के प्रति हो धैर्य और इन तीनों गुणों की प्राप्ति का आधार है, गुणों के सागर परमात्मा के प्रति दिल का सच्चा प्रेम। परन्तु प्रेम उसी के प्रति उत्पन्न होता है जिसके रूप व गुणों का ज्ञान हो।

आत्मा यदि परिशुद्ध, यथार्थ सत्य ज्ञान को समझ ले, उस पर निश्चय कर ले तो कर्मेन्द्रियों को उसी अनुरूप कर्म करने के संकेत मिलने लगते हैं। आत्मा में यदि बदज्ञान है तो कर्मेन्द्रियाँ विकर्म-कुकर्म करेंगी और अगर आत्मा में सद्ज्ञान, यथार्थ ज्ञान है तो कर्मेन्द्रियाँ पवित्र-शीतल होकर सुकर्म करेंगी। मुख्य है नेत्र या दृष्टि, जो आत्मा के दृष्टिकोण, सोच या रवैये से प्रभावित होती है।

पवित्र बनो, योगी बनो

परमपिता शिव ने स्वयं ब्रह्मामुख से कहा है कि यदि दुख और अशान्ति का अनुभव होता है तो कोई न कोई अपवित्रता का प्रभाव अवश्य है। मनुष्य जितना-जितना अपवित्र होता जा रहा है उतना-उतना वह आज परमात्मा के पीछे भाग रहा है, उसे पुकार रहा है क्योंकि यह कुदरत का नियम है कि किसी भी कमी को दूर करने के लिए उसके स्त्रोत की तरफ स्वतः भागा जाता है। परमात्मा 'पवित्रता' का सागर है और उसका मनुष्यों के प्रति पहला वाक्य ही है – 'पवित्र बनो, योगी बनो' अर्थात् मुझ परमपिता के पास आने के लिए मेरे जैसा पवित्र बनो और मुझे सच्चे दिल से याद करो। पवित्रता अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा पवित्र और योगी अर्थात् सहजयोगी (मनसा), राजयोगी (वाचा), कर्मयोगी (कर्मणा)। देखा जाये तो सारा का सारा गीता ज्ञान इसी एक महावाक्य – 'पवित्र बनो, योगी बनो' के इर्द-गिर्द है। शिव परमात्मा ने ब्रह्मा के मुख द्वारा अगर किसी एक शब्द को सबसे ज़्यादा परिभाषित किया है तो वह है – पवित्रता। उनके द्वारा कहे गये महावाक्यों में से कुछ पर ज़रा नज़र डाली जाये –

- अशान्ति का कारण है 'अप्राप्ति' और अप्राप्ति का कारण है 'अपवित्रता'।
- मनसा की पवित्रता हो, मनसा में सदा श्रेष्ठ स्मृति, आत्मिक स्वरूप (भाई भाई की भावना), वाचा में सदा सत्यता और मधुरता रहे और कर्मणा में सदा नम्रता और संतुष्टता – इसका प्रत्यक्ष फल सदा हर्षितमुखता होगी।
- अपवित्रता आत्मघात है। पवित्रता जीयदान है। भक्ति का अर्थ ही है, 'अल्पकाल' और ज्ञान का अर्थ है 'सदाकाल'। तो भक्त अल्पकाल के नियम पालन करते हैं, जैसे नवरात्रि मनाते हैं; जन्माष्टमी, दीपावली या कोई विशेष उत्सव मनाते हैं तो पवित्रता का नियम अल्पकाल के लिए जरूर पालन करते हैं।
- पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों की आँखों की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धंधा है। पवित्र संबंध और संपर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। बाप (भगवान) का वरदान पवित्रता है, रावण का श्राप अपवित्रता है।
- पवित्रता ही योगी बनने का पहला साधन है। पवित्रता ही बाप (भगवान) के स्नेह को अनुभव करने का साधन है। पवित्रता ही सेवा में सफलता का आधार है।
- जिस बात को आजकल की महान आत्मा कहलाने वाले भी असंभव समझते हैं, अननेचुरल समझते हैं लेकिन आप पवित्र आत्माओं ने उस असंभव को सहज अनुभव कर लिया। सारे विश्व के आगे आप चैलेन्ज से कह सकते हो कि

'पवित्रता तो हमारा स्व-स्वरूप है।' पवित्रता को माता कहते हैं, सुख-शान्ति उसके बच्चे हैं। पवित्र आत्माओं की निशानी 'सदा खुशी' है।

- पवित्रता ऐसी अग्नि है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है।
- पवित्रता की निशानी है स्वच्छता, सत्यता। व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता है। अगर व्यर्थ चला, समय गया, संकल्प गया, संतुष्टता गई तो सोलह कला नहीं बन सकेंगे। तो पवित्रता सिर्फ किसको दुख देना या पाप कर्म करना नहीं है लेकिन स्वयं में सत्यता, स्वच्छता विधिपूर्वक अगर अनुभव करते हो तो पवित्र हो।
- इस परमात्म ज्ञान की नवीनता ही पवित्रता है।
- द्वापर से लेकर किसी भी धर्मात्मा या महात्मा ने सर्व को होलिएस्ट नहीं बनाया है। स्वयं बनते हैं लेकिन अपने फालोअर्स को, साथियों को होलिएस्ट पवित्र नहीं बनाते और यहाँ पवित्रता ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार है। ब्राह्मण जीवन का जो आंतरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शांतस्वरूप, मन की संतुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मनसा की पवित्रता चाहिए।

उपरोक्त ईश्वरीय महावाक्यों से स्पष्ट होता है कि पवित्रता की इतनी सूक्ष्म, सार्थक, तर्कसंगत, युक्तियुक्त, प्रिय और विश्वसनीय विवेचना स्वयं परमात्मा ही कर सकते हैं, कोई मनुष्य नहीं। इस पर अमल करके ही घर-गृहस्थ में रहते सुख व शान्ति की एकरस, शाश्वत स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है। अपवित्रता या काम विकार अल्पकाल का दैहिक सुख व दीर्घकाल की ग्लानि व दुख देता है, परन्तु 'संस्कार रूप पवित्रता' वर्तमान में ईश्वरीय सान्निध्य का अलौकिक सुख, भविष्य के बन रहे भाग्य का प्रत्यक्षफल व आने वाली नई दुनिया के 21 जन्मों की प्रालब्ध की प्राप्ति कराती है। बस जरूरत है इन बातों को समझने की, निश्चय करने व सहजता से अनुकरण करने की। समझ साप्ताहिक पाठ्यक्रम के ज्ञान को अनुभव में लाने से आयेगी। निश्चय, अनुभव के मनन-चिन्तन से आयेगा व अनुकरण निश्चय शक्ति से पैदा हुई 'इच्छा शक्ति' से आयेगा। आइये पवित्र बनें, राजयोगी बनें। ❖

प्यारे-प्यारे ब्रह्मा बाबा

ब्र.कु. घमंडीलाल अग्रवाल, गुड़गांव

अपनी काशी, अपने काबा
प्यारे-प्यारे ब्रह्मा बाबा

निशिदिन मुरली मधुर सुनाते
ज्ञान-नदी में हैं ले जाते
मन का सारा अहं मिटाकर
जीने का गुर हमें सिखाते।
कहते शांति हृदय में धारो
उर का मेटो शोर-शराबा
अपनी काशी.....

व्यर्थ न भटको दिशा-दिशा में
अंतर समझो ऊषा-निशा में
प्रात: कर लो सभी संयमित
भक्ति-भाव से महके शामें
सुख ही सुख की हों बरसातें
करो बंद पीड़ा का ढाबा
अपनी काशी.....

जीवन मंदिर-सा पावन हो
बातों में सुंदर सावन हो
स्वार्थ न भटके पास ज़रा भी
हर दिन मानो वृंदावन हो
सर्वोपरि है सदा अहिंसा
हिंसा से हो खून-खराबा
अपनी काशी.....

फैलाएं हम भाई-चारा,
यह जग है परिवार हमारा।
मानवता की गूंजे जयजय
सांसों में खुशबू की धारा
बड़ा बना है और पूजा है
जिसने जन-जन का दुख दाबा।
अपनी काशी.....

गीत की एक पंक्ति ने बदल दिया जीवन

• ब्रह्माकुमार हरिचन्द, इसराना

मैं 19 मार्च, 2005 को मतलोडा में एक भाई के घर बाइक से जा रहा था। मैं अपने ग्राम से चार कि.मी. दूर पहुँचा ही था कि मैंने देखा, मेरा मित्र बलबीर मतलोडा की बस में चढ़ रहा है। मैंने सोचा, अवश्य ही यह भी वहीं जा रहा है। मैंने बस में जाकर आवाज लगाई, मास्टर जी, आप मतलोडा जा रहे हैं तो मेरे साथ बाइक पर चलो। फिर हम दोनों बाइक से निश्चित स्थान पर पहुँच गए। बलबीर भाई ने मुझसे कहा, नम्बरदार जी, क्या आप डेढ़ घंटे के लिए मेरे साथ रुक सकते हैं? मैंने पूछा, कहाँ पर? उसने कहा, ब्रह्मा भोजन और सत्संग है। मैंने कहा, सत्संग तो सुना है पर यह ब्रह्मा भोजन क्या होता है? यह तो कभी नहीं सुना। भाई ने कहा, आप जान जाएंगे जब खाकर देखेंगे। फिर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पहुँच कर हमने ब्रह्मा भोजन किया और सत्संग सुना। वहाँ बज रहे दिव्य गीत सुनकर ऐसा लगा कि ये गीत मैंने पहले कहीं सुने हैं। इसके बाद अपने कार्य पूरे कर हम घर वापस आ गए।

रेडियो पर सुना 'प्रेम से बस दो घड़ी..'

दूसरे दिन सवेरे रेडियो पर भक्ति गीत लगाए तो सबसे पहले जो गीत आया, वह था, 'प्रेम से बस दो घड़ी प्रभु का ध्यान कीजिए..।' मैं सोचने लगा, यह गीत तो मैंने कहीं सुन रखा है। काफी ध्यान करने के बाद याद आया कि कल मतलोडा में ब्रह्माकुमारी आश्रम में सुना था। इस बात पर मैंने कोई खास ध्यान नहीं दिया और सोचा कि ऐसा तो अक़्सर हो ही जाता है।

सत्कर्म का ज्ञान ज़रूरी

इसके तुरंत एक घंटे बाद मैं अपने दोस्तों के साथ कहीं बाहर जा रहा था। हमने कार में शराब की एक दर्जन बोतलें रख लीं और सिगरेटों के पैकेट भी रख लिए। मैं शराब बहुत पीता था, मेरा जीवन पशु के समान था, मैं हर बुरी चीज को खाता था। जैसे ही मैं गाड़ी में बैठा, ड्राईवर ने धूप बत्ती जलाने के बाद कैसेट चालू कर दी। उसमें भी सबसे पहला गीत यही आया, 'प्रेम से बस दो घड़ी प्रभु का ध्यान कीजिए ...।' इस बार यह गीत मैंने बड़े ध्यान से सुना। इसमें एक पंक्ति आई, 'मानव जीवन में सत्कर्म का ज्ञान ज़रूरी है।' यह पंक्ति मेरे मन में बार-बार दुहराई जाने लगी कि यह तो कहता है, मानव जीवन में सत्कर्म का ज्ञान ज़रूरी है, तो मैं भी तो मानव हूँ। यह सोचकर मैंने गाड़ी रुकवाई और दोस्तों से यह कहकर उतर गया कि भाई, मुझे कोर्ट में एक जरूरी काम है। मुझे याद आ गया कि मुझे

किसी की जमानत करवानी है।

घर आकर मैंने बाइक उठाई और इसराना-पानीपत स्थित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पहुँच गया। उसी समय क्लास खत्म हुई थी। सारे भाई क्लास से बाहर आ रहे थे। इंचार्ज बहन ने पूछा कि भाई जी, आपको किससे मिलना है? मैंने कहा, किसी से भी नहीं। बहन जी ने कहा, यहाँ पर कैसे आना हुआ? मैंने कहा, बहन जी, मुझे एक गीत सुनना है। बहन जी ने पूछा, कौन-सा गीत? मैं यह तो भूल गया कि 'प्रेम से बस दो घड़ी ...' परन्तु मुझे यह याद रहा कि मानव जीवन में सत्कर्म का ज्ञान जरूरी है। बहन जी ने कहा, 'प्रेम से बस दो घड़ी' वाला गीत तो नहीं था। मैंने कहा, हाँ, हाँ, यही था।

गन्दगी साफ हो गई

बहन जी ने यह गीत टेप में चालू कर दिया। मेरे को ब्रह्मा बाबा का चित्र देख ऐसा महसूस होने लगा कि जैसे कोई काफी वर्षों के बाद आकर मिला

हो। गीत सुनने के बाद बहन जी ने मेरा सात दिन का कोर्स शुरू करा दिया। कोर्स के दौरान मुझे बहनें योग में बैठाती थी, मुझे अनुभव होता था जैसे कि मेरी हड्डियों में से पानी बह रहा है। तीसरे दिन मैंने बहन जी से पूछा, बहन जी, आप मुझ पर जादू तो नहीं कर रही हो? बहन जी ने कहा, नहीं भाई जी, हम कुछ जादू-टोना नहीं जानती, यह तो आप पर भगवान खुश हुआ है, आप जो गंदा खान-पान कर रहे थे, उसको भगवान साफ कर रहे हैं। कोर्स के पहले दिन ही शराब व अन्य नशे मुझसे छूट गए और मैं धारणायुक्त बाबा का बच्चा बन गया।

स्वर्ग में सीट बुक करवा लो

• ब्रह्माकुमार सतपाल, जम्मू

जनवरी, 1995 की बात है, मैं अंबाला में कार्यरत था। हमारी कॉलोनी में मेजर रामकृष्ण जी भी रहते थे। एक दिन उनकी युगल की मेरी युगल से भेंट हो गई। बातों-बातों में वे मेरी युगल से कह गई – 'स्वर्ग में सीटें बुक हो रही हैं, आप भी बुक करवा लो।' बात मेरी युगल को कुछ अजीब-सी लगी। जब शाम को मैं दफ्तर से लौटा तो उन्होंने स्वर्ग में सीट बुक करवाने की बात मुझसे कही। मुझे बड़ी हैरानी हुई लेकिन बात दिल को लग गई। मैंने उसी समय मेजर रामकृष्ण जी को फोन किया। उन्होंने इस विषय पर कुछ और प्रकाश डाला और कहा कि कल सुबह छह बजे तैयार रहना, मैं लेने आऊँगा। मैंने कहा, कल तो रविवार है, खूब सोने का दिन है इसलिए किसी और दिन देखेंगे। लेकिन आश्चर्य, अगले दिन सुबह चार बजे ही मैं जाग गया, नींद गायब हो गई। मैंने अपनी युगल को उठाना चाहा तो वह तो पहले से ही जगी हुई थी। हम दोनों तैयार हो गये। गाड़ी का हॉर्न बजा तो हम सड़क पर पहुँच गये, गाड़ी में बैठ गये और चल पड़े अनजाने गंतव्य की ओर।

गाड़ी सब्जी मंडी में ब्रह्माकुमारी आश्रम के सामने रुकी, हमें जानी-पहचानी-सी जगह महसूस हुई। मेजर साहब के साथ-साथ हम ऊपर पहुँचे। हमें एक कमरे में बैठा दिया गया। सामने एक वृद्ध का फोटो रखा था। हम फोटो देखते ही रह गये। उनकी मीठी मुस्कान आकर्षित कर रही थी। धीरे-धीरे और भाई-बहनें भी आते गये परंतु वे दूसरे कमरे में बैठ रहे थे। लगभग 45 मिनट बाद मेजर रामकृष्ण जी आए और हमारी मुलाकात निमित्त बहन जी से करवाई। वे हमें दीवार पर लगे एक चार्ट के पास ले गई और तीन लोकों का परिचय करवाया। उस चार्ट को देख कर उसी क्षण निश्चय हो गया कि अब मैं सही जगह पर पहुँच गया हूँ। यह जान कर मुझे बहुत खुशी हुई कि भगवान परमधाम में रहते हैं और एक तारे की तरह हैं। यकीन मानिए, कई तीर्थयात्रायें करने, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च आदि के चक्कर लगाने और वर्षों तक श्रीमद्भगवद् गीता के पाठ करने पर भी जो खुशी प्राप्त नहीं हुई थी, वह क्षण भर में यहाँ मिल गई। तत्पश्चात् आत्मा और परमात्मा का ज्ञान मिला और उसी समय से प्रारंभ करके सात दिन का कोर्स तीन दिनों में पूरा कर लिया, फिर मुरली सुनने लगे।

पहली मुरली सुनने से ही निश्चय हो गया कि ऐसी श्रेष्ठ, उचित भाषा और शब्दों की संरचना केवल भगवान की ही हो सकती है। उस दिन से रोज़ाना शाम को मुरली सुनते और आनन्द प्राप्त करते। जो भी मुरली सुनते, उसकी फोटोकॉपी करवा कर रख लेते और बार-बार पढ़ते। फिर एक दिन मेजर रामकृष्ण जी की युगल ने पूछा, 'स्वर्ग में सीट बुक करवा ली।' हमने कहा, ''जी बहन जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद जो आप हमें सच्चाई के रास्ते पर चलाने और सच्ची कमाई कराने के निमित्त बने।'' अब तो हमें यही एहसास होता है कि हमारी भक्ति पूरी हुई और भगवान ने हमें कोटो में कोई और कोई में भी कोई बनाकर स्वर्ग के वर्से का अधिकारी बना दिया। ❖

जीने का सहारा मिल गया

• ब्रह्माकुमार विष्णु, मुजफ्फरपुर

मेरा व्यापार मेरे ममेरे भाई के साथ बहुत ही सुन्दर ढंग से पिछले दस वर्षों से चल रहा था। अचानक स्वास्थ्य बिगड़ जाने से मेरा ध्यान व्यापार की तरफ से कम हुआ, साथी पर सारी ज़िम्मेवारी आ गई और नुकसान होने लगा। जिनसे हमें बकाया रुपया लेना था वे दे नहीं रहे थे एवं जिनको हमसे लेना था वे इकट्ठे होकर दुकान का सारा माल लूटकर चलते बने।

दवा हुई बेअसर

दुकान में माल रहा नहीं। घर खर्च के लिए धन की किल्लत होने लगी। संबंधियों ने मुँह मोड़ लिया। जिनको हम सदा मदद करते थे उन्होंने भी किनारा कर लिया। मैं सबसे बदला लेने के लिए बेचैन रहने लगा। कुछ लोगों पर हमने मुकद्दमा दायर कर दिया, कुछ लोगों ने मेरे पर मुकद्दमा कर दिया। दिन-भर यही सोच चलता रहता था कि अब क्या होगा, कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था। चिंता दूर करने के लिए एक दवा का सेवन करने लगा परंतु कुछ समय बाद दवा ने भी काम करना बंद कर दिया। मैं दिन-भर यही सोचता कि जीने से अच्छा है स्वयं को खत्म कर दूँ। बार-बार ऐसे विचार मन में चलने लगे। जीवन जीने की इच्छा मानो खत्म हो गई। जीवन एक बोझ बन गया।

जब मुकद्दमों के चक्कर लगा रहा था तो एक ब्रह्माकुमार भाई, जो वकालत करते थे, ने मदद की। एक दिन हम दोनों आवश्यक कार्य से थाने में एक पदाधिकारी से मिलने गये। पदाधिकारी उपस्थित नहीं थे। बहुत समय बीत गया तो भाई साहब ने कहा, चलो, मैं आपको एक अच्छी जगह लेकर चलता हूँ। हमें तो इंतज़ार का समय व्यतीत करना था सो उनके साथ हो लिए।

जलते पर मलहम लगी

वे हमें ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र, जिसका नाम सुख-शान्ति भवन है, पर लेकर गये और योगकक्ष में बिठा दिया। बाबा पर दृष्टि पड़ते ही मेरे अन्दर सिहरन दौड़ गई तथा मैं अपने को बहुत हलका महसूस करने लगा। कुछ समय बाद वे हमें निमित्त बहन के पास लेकर गये। दीदी की दृष्टि पड़ते ही मैं निहाल हो गया। उनको हमने सारी समस्या सुनाई। दीदी ने जो अनमोल समाधान बताए वो हमारे दिलो-दिमाग में उतरते चले गए एवं लगा कि आज किसी ने सच्चे दिल से प्यार दिया एवं जलते पर मलहम लगाया। दुनिया में तो जले पर नमक ही डालते हैं। मेरा चेहरा सुख व खुशी के आँसुओं से भीग गया। दीदी ने कहा – 1. जो होना था वो हो गया, अब उसको भूल जाओ, जो बीत गया वो कल की बात थी। बीता हुआ कल तो दुख ही देगा, आज तुम्हारा अपना है, उसे सुधारो। 2. लोग क्या कहते हैं या कहेंगे उस सोच को मन से निकाल दो। दुनिया तुम्हारे विषय में जो सोचती है, सोचने दो, उससे तुम्हें क्या फर्क पड़ेगा। 3. तुम तो अविनाशी आत्मा हो, तुम्हें कोई नहीं मार सकता, ना आग जला सकती है, ना पानी डुबो सकता है, तुम क्यों चिन्ता करते हो? 4. तुम्हारे दिल में जो बदले की आग जल रही है उसे बुझा दो, अपने जीवन को बदल लो। 5. तुम पर बाबा की दृष्टि पड़ गई है, अब तुम्हारी ज़िम्मेवारी बाबा की है।

ऐसी मीठी सत्य बातें सुनकर लगा जैसे कि मैं पुराने जीवन से मर गया हूँ तथा नया जीवन प्राप्त हो गया है। दीदी के कहे अनुसार अपने जीवन में परिवर्तन लाने लगा तो जीवन सचमुच बदलने लगा। रोज़ सवेरे चार बजे सेन्टर पर पहुँचना, बाबा से योग लगाना तथा मुरली सुनना मेरी दिनचर्या बन गई।

ठगे हुए का क्या ठगा जाना

जब हमारे मोहल्ले वालों को पता चला कि यह ब्रह्माकुमारीज़ में जाने लगा है तो उन्होंने युगल को उलटा पाठ पढ़ाना शुरू कर दिया कि इसे रोको वरना यह संन्यासी बन जायेगा, घर-परिवार सब छोड़ देगा तथा जो भी तुम्हारे पास है वो ब्रह्माकुमारी वाले ठग लेंगे (सिखाने वाले यह भूल गये कि जो पहले ही ठगा जा चुका है उसके पास अब ठगाने के लिए बचा

ही क्या है? जब मेरी दुकान लुट रही थी तब तो एक भी नहीं आया और अब जब मुझे शान्ति का मार्ग मिला तो उन्हें मेरे ठगे जाने की चिन्ता लग गई। संसार दुखियों के आँसू तो नहीं पोंछता पर जो सुख के मार्ग पर आगे बढ़ता है, उसके रास्ते में टाँग ज़रूर अड़ा लेता है)। घर में मेरे लिए समस्या खड़ी हो गई। मुझे काफी कुछ सुनना-सहना पड़ने लगा। ये बातें जब मैंने दीदी को बताई तो उन्होंने कहा, युगल को भी साथ लाओ। काफी कहने पर युगल तैयार हो गई। फिर तो उन्होंने भी कोर्स किया। आज वो बाबा के हर कार्य में सहयोगी बन गई है।

कुछ समय बीत जाने पर मेरे लौकिक भाई ने मुझे सुझाव एवं सहयोग देकर मार्बल के व्यापार में लगाया। अब मैं अपने कार्य एवं जीवन में संतुष्टता का अनुभव कर रहा हूँ पर सेन्टर दूर होने के कारण रोज़ जाने में दिक्कत महसूस होने लगी।

रोज़ मुरली सुनने का सौभाग्य

एक दिन मन में ख्याल आया कि अगर बाबा भविष्य में मकान बनाने का आदेश देंगे तो सबसे पहला कमरा बाबा के लिए बनाऊँगा परंतु मकान बनना संभव नहीं लग रहा था। कुछ दिनों बाद ख्याल चलने लगा कि हम किराये पर रह रहे हैं तो बाबा को भी किराये पर ले आएँ। दीदी को बताया तो दीदी ने कहा, कल करो सो आज करो। हमें घर के बगल में ही एक कमरा किराये पर मिल गया, वहाँ हमारी क्लास शुरू हो गई। अब हमें रोज़ मुरली सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। मोहल्ले वाले जो विरोध कर रहे थे, वे भी सहयोगी बन प्रतिदिन ज्ञानामृत का पान कर रहे हैं।

बाबा का मैं पद्मापद्म गुणा शुक्रगुज़ार हूँ जो बाबा ने एक ही जीवन में दो जीवन जीने का सौभाग्य दिया। आज मैं अपने को दुनिया का सबसे भाग्यशाली मानव समझता हूँ। मुझे अपने भाग्य पर गर्व है। बाबा का यह महावाक्य, 'जो हुआ अच्छा हुआ, जो होगा अच्छा होगा' पूर्ण रूप से मेरे पर चरितार्थ हो रहा है। थोड़ा गया बहुत पाया। विनाशी धन गया तो गया पर अविनाशी धन अथाह प्राप्त हो रहा है। ❖

वाणी का रहस्य

एक संत ने अपने चेलों से पूछा, जब गुस्सा आता है तो हम चिल्लाते क्यों हैं? जब मन हलचल में आता है तो लोग एक-दूसरे से ज़ोर-ज़ोर से क्यों बोलते हैं?

चेले सोचने लगे। एक ने कहा, चूंकि हम अपनी शान्ति खो देते हैं इसलिए ज़ोर-ज़ोर से बोलते हैं।

'जब दूसरा व्यक्ति बिल्कुल समीप ही बैठा है तो चिल्लाने की क्या आवश्यकता है, क्या उससे धीमे स्वर से बात नहीं की जा सकती?' – संत ने पुनः पूछा। कोई भी उत्तर ना मिलने पर उन्होंने स्वयं ही बताया, जब दो व्यक्ति एक-दूसरे पर क्रोधित होते हैं तो उनके दिलों की दूरी बहुत बढ़ जाती है। उस दूरी तक पहुँच बनाने के लिए चिल्लाना तो पड़ेगा ही ताकि एक-दो को सुना जा सके। वे जितने ज़्यादा क्रोधित होंगे, दिल की बढ़ी हुई दूरी के कारण चिल्लाहट भी उतनी ही ज़्यादा होगी।

संत ने आगे पूछा, जब दो लोगों का आपस में प्रेम हो जाता है तो क्या होता है? फिर स्वयं ही उत्तर दिया, वे बहुत ही मीठे स्वर में बातें करते हैं क्योंकि उनके दिल एक-दो के बहुत करीब आ जाते हैं, दूरी ना के बराबर रह जाती है। ज्यों-ज्यों प्यार बढ़ता है, उनकी आवाज़, आवाज़ न रहकर फुसफुसाहट में बदल जाती है। गहन प्यार की अवस्था में तो वे फुसफुसाना भी बंद कर देते हैं और केवल एक-दूसरे को देखते ही रहते हैं।

कहानी का भावार्थ बहुत गहरा है। भगवान शिव का हम आत्माओं से जिगरी प्रेम है इसलिए वे गहन शान्ति की अनुभूति कराते हुए, खुले नेत्रों से दृष्टि देते हुए रूहानी वात्सल्य और वरदानों की हम पर वर्षा करते हैं। जब महावाक्य सुनाते हैं तो भी गले से फुसफुसाने जैसी मीठी, प्यारी, रसीली, प्रेमभीगी, धीमी वाणी में बोलते हैं जो दिल में उतरकर जीवन का परिवर्तन कर देती है।

– कुमारी दिव्यता

निन्यानवे का चक्कर

• ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस

गुरु नानक देवजी ने कहा था – 'नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात' लेकिन आजकल निन्यानवे के फेरे के नशे में नाम खुमारी के स्थान पर 'दाम खुमारी' चढ़ी रहती है। सोते-जागते सिर्फ एक ही स्वप्न कि सौ पूरे करने हैं। किस प्रकार से किसे चक्कर में डालें। हाल-चाल हो या अन्य कोई वार्तालाप, हेर-फेर कर वही क्रम निन्यानवे के चक्कर का ही आ जाता है। आध्यात्मिक तो बाह्य रूप से वे पहले जैसे ही दिखाई पड़ते हैं परन्तु अब 'राम' की चर्चा के साथ 'दाम' की चर्चा अवश्य करते हैं। विभिन्न कंपनियों के मनलुभाऊ विज्ञापन, पैसा दुगना-तिगुना करने का कमाऊ फार्मूला और ऊपर से आकर्षक गिफ्ट। दिन में मुंगेरी लाल के हसीन सपने दिखाई देने लगते हैं। पहले 'ज्ञान खज़ाने' के आगे था सारे जग का धन कम, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की स्थिति रहती थी परन्तु अब जब से निन्यानवे का फेरा लगा है 'दाम' खज़ाने के आगे 'ज्ञान' खज़ाना लगने लगा बहुत कम। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के स्थान पर होने लगा – कुबेराय नम: (काले धन का अधिपति कुबेर को कहा गया है)। ऐसे में यदि संसारी धोखाधड़ी के माहौल में कहीं ग़लत फँस गये तो मुंगेरी लाल के हसीन सपने टूटने में देरी नहीं लगती। फिर वही पुरानी स्थिति और छले जाने का ग़म, इसके साथ ही हृदय संबंधी अनेक बीमारियाँ उपहार में मिल ही जाती हैं।

अन्धी दौड़ में हो गया जीवन का सूर्यास्त

ऐसी आत्मा का ब्रह्ममुहूर्त जागरण भी कुछ होता है, कुछ नहीं, प्रात:काल सुमिरण किया, न किया, संध्या वन्दना हुई, न हुई, पूरा समय सिर्फ गुजरा तो धन के चिन्तन में। 'धन-धन सतगुरु तेरा ही आसरा' के स्थान पर 'धन-धन लक्ष्मी, तेरा ही सहारा, तेरे बिना कोई नहीं हमारा' वाली स्थिति बन जाती है। एक भक्त की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान ने कहा कि तुम सूर्योदय से सूर्यास्त तक पृथ्वी का जितना हिस्सा कदम रखकर पूरा करोगे, उतना तुम्हारा हो जायेगा। वह पूरा दिन, भूखा-प्यासा रहकर (धन की ऐसी कमाई के समय मनुष्य भूख-प्यास सब भूल जाता है) थकने के बाद भी सूर्यास्त तक ज़ोर लगाकर दौड़ता रहा। सूर्यास्त हुआ और वह थकान की वजह से गिर पड़ा, उसके जीवन का भी सूर्यास्त हो गया। कदमों से मापी गई ज़मीन वहीं पड़ी रह गई पर भोगने वाला चला गया। धन कमाने के नाम पर अधिकांश लोगों की संसार में यही हालत हो जाती है। वे पूरा जीवन कमाई-कमाई और सिर्फ कमाई में लगे रहते हैं। न परिवार की ओर पूरा ध्यान दे पाते हैं, न व्यवहार का ध्यान, न परमार्थ का ध्यान और न ही परमात्मा का ध्यान रह पाता है। बहुतों की युवावस्था में ही बुढ़ापे के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। जीवन का सूर्यास्त अंधी दौड़ में हो गया, पता ही नहीं पड़ा, फिर भी घर (परमधाम) जाना याद नहीं पड़ता।

धनवान बनने की सोई आशा अवसर पाकर जागेगी

यदि हम संसारी जीवन से हटकर किसी विशेष महान आध्यात्मिक लक्ष्य के लिए और सारे जगत के कल्याणकारी कर्त्तव्य के लिए समर्पित हुए हैं तो पहली बात तो यह है कि सारी दुनिया को चलाने वाला हमें भी चलायेगा, जीवन की नैया को पार लगायेगा। अगर यह विश्वास नहीं है या विश्वास में कहीं थोड़ी भी कमी है तो अपने बचाव के लिए धन को एक सुरक्षा कवच बना लेते हैं और उसे ही इकट्ठा करने के प्रयास में जुट जाते हैं। ऐसे में जीवन के वास्तविक उद्देश्य से भटका हुआ मन भौतिकता की प्राप्तियों, साधना के स्थान पर साधनों के पीछे मृगतृष्णा की तरह पगलाया

हुआ भागने लगता है। इसका अर्थ यही हुआ कि हमें वैराग्य आया तो था पर केवल मनुष्यों के दुर्व्यवहार के कारण मनुष्यों से आया था, संबंधों से आया था, धन-वैभव से वैराग आया नहीं था। लेकिन वैराग का अर्थ है व्यक्ति, वैभव, वस्तु सबसे वैराग। यदि सांसारिक धन, वैभवों आदि से बुद्धि नहीं हटी है और किंचित भी अन्दर में बहुत धनवान बनने की आशा सोई पड़ी है या ज़बरदस्ती नियंत्रित करके सुला दी गई है तो यह अवसर पाकर जागेगी, धन कमाने में मन को अवश्य लगायेगी।

आकर्षण अकेला नहीं आता

राजा भर्तृहरि को ठोकर लगी थी पत्नी के व्यवहार से। वैराग आ गया, संन्यासी बन चल पड़े जंगल की ओर। चांदनी रात थी। दूर से कुछ चमकता नज़र आया, मणि जैसा लगा, झुककर उठाने का प्रयास किया पर हाथ पान की पीक से मैला हो गया। चांदनी में वह गंदगी, मणि होने का आभास दे रही थी और भर्तृहरि उस आभास को सच मान बैठा, क्यों? क्योंकि धन से तो ठोकर लगी नहीं थी, ठोकर तो मात्र पत्नी से लगी थी, धन की आसक्ति तो थी, तभी तो झुकने और उठाने की मेहनत की। नहीं तो मणि-माणिक्य के खज़ाने को ठोकर मार देने वाले को, गेरु कफनी पहन लेने वाले को मणि दिखी ही क्यों, आकर्षण गया ही क्यों? कहीं हमारा भी हाल वैसा ही तो नहीं है। मनुष्य तो नहीं खींचते पर धन, वस्तु, साधन, सुविधा, वैभव खींचते हैं। मनुष्य में तो आँख नहीं डूबती पर चीज़ों में डूब जाती है? लेकिन बहुत चीज़ें इकट्ठी हो जाने पर उनका दिखावा करने, उनके दम पर किसी को आकर्षित करने का भी मन बन ही जाता है। कहीं ऐसा न हो कि पहले कार में मन डूबा, फिर कार की खाली सीट पर बिठाने के लिए किसी और में भी मन डूबने लगा। आकर्षण अकेला नहीं आता, अपने साथ हज़ारों दूसरे आकर्षण लेकर आता है। जो आँख भगवान को पाकर, देखकर तृप्त नहीं हुई, वह भला चीज़ों से क्या तृप्त होगी? अत: चेक करें, कहीं धनी को भूलकर धन से तो बुद्धियोग नहीं लग रहा?

तुलना करें अपनी पिताश्री से

किंचित तुलना करके देखें स्वयं की, इस रुद्र-गीता-ज्ञान-यज्ञ के संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा के कृतित्व से, तो अहसास होगा कि कितना अन्तर है! एक ओर वे (पिताश्री) हीरे-जवाहरात के व्यापारी जिनके परिजन घर में गलीचे से नीचे पैर भी नहीं रखते थे और राजा, साहूकार जिनके स्वागत में अपनी गद्दी और सिंहासन से उठकर खड़े हो जाते थे। जिन्होंने ज्ञान-रत्नों रूपी खज़ाने के आगे संसारी धन को गदाई (तुच्छ) समझकर सब कुछ मानवोत्थान अर्थात् देवोत्थान और भारत को स्वर्गस्थान बनाने की सेवा में समर्पित कर दिया और फिर कभी इसे हाथ भी नहीं लगाया। दूसरी ओर वे, हम सभी जो उन्हीं ज्ञान-रत्नों के स्थान पर संसारी धन (गदाई) को महत्त्व दे रहे हैं। अगर कोई कहे कि प्रात:कालीन योग, ध्यान, साधना, तपस्या, ईश्वरीय स्मृति, ईश्वरीय ज्ञान, शिक्षाओं के समय में फलां कार्य करने से धन की ज़बरदस्त आमदनी होगी तो इन ज्ञान-रत्नों से भी छुटकारा पाने में देरी नहीं करते। ओहो! यह कैसा दुर्भाग्य है! घर-परिवार संभालने वालों को भी बाबा ने धन कमाने की आदर्श विधि बताई है, आठ घंटा शरीर निर्वाह, आठ घंटे नींद-आराम और शेष आठ घंटे आत्म-निर्वाह।

समय रहते संभलने में भलाई है

प्यारे बाबा ने बड़ी प्यारी युक्ति बताई है – 'बच्चे, व्यवहारी और परमार्थी दोनों साथ-साथ। धन की वृद्धि के साथ-साथ याद (योग) की विधि को मत भूलो। स्थूल धन भी आता रहेगा और मन ही मन आत्मा की अविनाशी कमाई भी होती रहेगी। शरीर निर्वाह के पीछे मूल आधार है

आत्मा का निर्वाह। शरीर निर्वाह और आत्मा का निर्वाह – दोनों का बैलेन्स चाहिए। योग अर्थात् परमार्थ; परमार्थ अर्थात् परमपिता परमात्मा की सेवा (मन, वाणी और कर्म से हर कार्य जन-कल्याण अर्थ), इसे कहा जाता है श्रीमत प्रमाण कर्म करने वाला कर्मयोगी।' परन्तु जो समर्पित हो गये, भगवान के बच्चे बन गये, उनके अपने बाल-बच्चे तो हैं नहीं तो फिर वे क्यों धन के बखेड़े में उलझे हैं? बाबा तो यहाँ तक कहते हैं, यदि किसी के पास परिवार निर्वाह योग्य धन है तो वह भी कमाने के चक्कर में ना पड़कर ईश्वरीय सेवा में समय लगाए। भगवान ने यह भी कहा है, जो मेरा बच्चा बन गया, उसको दाल-रोटी देने की ज़िम्मेवारी मेरी है। जब इस यज्ञ में बेगरी पार्ट था, तब कई लोग निन्यानवे के चक्कर में पड़ भागन्ती हुए पर आज पश्चाताप कर रहे हैं। क्या हम उनसे कुछ नहीं सीख सकते? क्या विनाशी धन के आकर्षण में भगवान के प्यार, दुलार, श्रीमत का त्याग कर देंगे? यदि नहीं तो समय रहते संभलने में ही भलाई है। अत: हे आत्मन्! बैंक-बैलेन्स बढ़ाते-बढ़ाते कहीं जीवन रूपी गाड़ी के पेट्रोल का बैलेन्स ही खत्म न हो जाये। जब बन्द हो जायेगा जीवन रूपी पहिया तो क्या करेगा रुपैया, मेरे भैया!

❖

अद्भुत किन्तु सत्य

ब्रह्माकुमार अविनाश, गुड़गाँव

अन् 2008, 31 दिसम्बर की रात को ईश्वरीय मिलन के लिए मैं शान्तिवन परिसर में पहुँचा। डायमंड हाल में ठीक समय पर बाबा का आगमन हुआ। स्वमान में स्थित हो मैं बाबा के महावाक्यों को अर्जित कर रहा था कि अचानक ही मुझे दवाई याद आई जो निर्धारित समय पर लेनी थी। मैं आहिस्ता से उठकर कमरे में आया और दवाई लेने के लिए हाथ बैग में डाला, पर यह क्या, गुटखों के कई पैकेट हाथ लगे। पहले तो मैं बहुत अचंभित हुआ। फिर समझ में आया कि मैं बगैर चैक किए अपने पुत्र प्रशांत का बैग ले आया हूँ। मुझे बिल्कुल पता नहीं था कि उसे 30-35 पैकेट गुटखे हर रोज़ खाने की बुरी आदत पड़ चुकी है। मैं शान्त मन से दवाई लेकर पुन: डायमंड हॉल में आकर बैठ गया। उस समय बाबा कह रहे थे, 'बाप तो हर बच्चे को परिवर्तन शक्ति भव का वरदान देते हैं।' उस वरदानी वातावरण में मुझे श्रेष्ठ संकल्प उठा, 'बाबा, आज से प्रशांत की गुटखा खाने की लत छूट जाये।' बस, यह श्रेष्ठ संकल्प करके बाबा से मिलन मनाने का अनुभव करने लगा। फिर निश्चित दिन पर मैं वापस लौकिक घर पहुँच गया। दो दिन बाद रात को मेरा पुत्र मेरे पास आया और सारी बात सच-सच बताई कि कैसे उसने गुटखा खाना शुरू किया, दिन प्रतिदिन गुटखों की संख्या बढ़ती गई, फिर 31 दिसंबर की रात को ठीक 9.30 बजे जैसे ही गुटखा मुँह में डाला तो मुँह कड़वाहट से भर गया, उसे स्वयं के मुख से ही दुर्गन्ध आने लगी और उसने गुटखा थूक दिया और सारे पैकेट कचरे में डाल दिये। मैं सुनकर अंदर ही अंदर प्यारे बाबा का शुक्रिया अदा कर रहा था। कुछ दिनों बाद उसको पान खाने की आदत ने जकड़ लिया। जैसे ही मुझे पता चला, तुरंत बाबा के वरदान को याद किया और उसे वायब्रेशन्स दिये। कुछ दिनों बाद फिर से उसने मुझे सुनाया कि कैसे उसे पान खाने से दाँतों में दर्द रहने लगा तो अंत में खाना ही छोड़ दिया। यह है प्यारे बाबा के वरदानों की कमाल! इसलिए दिल गाता है –

ज्ञानसूर्य ने मन में सवेरा किया,
ज़िन्दगी की राहों को सुनहरा किया।
पाया जीवन नया, की हम पर दया,
प्यारे बाबा दिल कहे, तेरा शुक्रिया।।

दोषी कौन ?

• ब्रह्माकुमारी ज्योति, इंदौर (रानीबाग)

एक कन्या गरीब परिवार में जन्म लेती है, गरीब माँ-बाप उसे अपना पेट काट-काट कर पढ़ा-लिखाकर लायक बनाते हैं और उसे पैरों पर खड़ा करने के लिए चकाचौंध वाली नगरी मुंबई में भेज देते हैं। वहाँ वह मेहनत व लगन से पत्रकार बन जाती है और अच्छी नौकरी करने लगती है। कुछ ही दिनों बाद एक युवक उसे अपने झूठे प्रेम का दिलासा देने लगता है, वह कन्या अपने स्वाभिमान और मातपिता की लाज की खातिर उसका विरोध करती है परंतु, कहा जाता है, 'माया बड़ी मोहिनी मेरे राम' – इस बात को सत्य साबित करते हुए वह कन्या उस झूठे और फरेबी व्यक्ति के झूठे प्रेमजाल में फँस जाती है। कुछ समय बाद वह युवा किसी अन्य लड़की से शादी कर लेता है और वह कन्या, जो गरीब माँ-बाप की आशाओं का दीपक थी, डिप्रेशन का शिकार हो जाती है। उसे नौकरी छोड़नी पड़ती है और अन्ततः डॉक्टर उसे पागल करार दे देते हैं।

बिना जाँच-परख का सौदा मूर्खता है

सवाल यह है कि दोषी कौन? कोई कह सकता है कि वह मनचला युवक दोषी है, हाँ, है दोषी परंतु ऐसे मनचलों के युग में रहने वाली कन्याओं को भी तो समझदार हो जाना चाहिए ना! जब आये दिन के समाचारों में इस तरह के झूठे प्रेम-प्रसंगों के भंडाफोड़ होते रहते हैं और उनमें फँसे लोगों के कीमती जीवन की बरबादी की कहानियाँ दिलों को दहलाती रहती हैं तो क्या नौजवान कन्याएँ उनसे शिक्षा लेकर सावधान नहीं रह सकतीं? जब व्यक्ति बाज़ार में जाता है और दो-चार सौ का कूकर या अन्य कोई चीज़ खरीदता है तो उसे कई बार जाँचता-परखता है, मोल-भाव करता है, साथ वाली दुकानों से पूछताछ करता है और इतना करने पर भी घर में किसी के द्वारा नापसंद किये जाने पर वापस कर देने की शर्त के साथ उसे खरीदता है। दो-चार सौ रुपये की चीज़ की इतनी परख और जाँच-पड़ताल और जीवन जैसी कीमती चीज़ को अर्पित करने में ज़रा जाँच-परख ना करें, यूँ ही किसी पर लट्टू हो जायें? ना चरित्र का ज्ञान, ना आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति का ज्ञान और दिल जैसी कीमती चीज़ का सौदा कर लें, यह तो सरासर मूर्खता है। इसका यदि ग़लत परिणाम निकले तो फँसाने वाला और फँसने वाला दोनों ही दोषी हैं। फँसने वाला और ही ज़्यादा दोषी है क्योंकि शिकारी तो जाल बिछायेगा, यदि पंछी सावधान हो तो हज़ारों जाल भी उसका क्या बिगाड़ेंगे?

जैसा कर्म, वैसा फल

प्रायः देखा गया है कि महिलायें भावनात्मक होती हैं। उनका किसी भी क्षेत्र में समर्पण भावनात्मक रूप से होता है, फिर चाहे वह किसी भी देश, समाज या व्यक्ति विशेष के लिए ही क्यों न हो। पुरुष के पास विवेक का बल ज़्यादा और भावना का स्थान कम होता है। अपने इस विवेक का दुरुपयोग वह दूसरे को वरगलाने में करने लगा है। दुरुपयोग चाहे अपने विवेक का किया जाये, चाहे भावनाओं का, परिणाम पतन ही निकलेगा। कर्मगति कहती है कि किसी को दुख देने वाला स्वयं सुखी नहीं हो सकता। कर्म की गति का ज्ञान देने के लिए ही भगवान वर्तमान समय धरती पर अवतरित हुए हैं। **भगवान कहते हैं, कर्म करना अर्थात् बीज बोना। आम का बीज बोयेंगे तो फल आम ही निकलेगा। गन्ना बोयेंगे तो गन्ना निकलेगा। गले हुए बीज से कभी अच्छा फल नहीं निकल सकता और काँटों वाले बीज से काँटें ही निकलते हैं। किसी को धोखा देना, फँसाना, झूठ बोलना, ठगना, मारना ..ये सभी कर्म काँटों वाले बीजों की तरह हैं जिनका फल आज नहीं तो कल अवश्य निकलेगा और बोने वाले को ही चुभेगा।** यदि हम ऐसी चुभन से बचना चाहते हैं तो हमें हर कर्म सावधानीपूर्वक करना होगा।

इस लेख के माध्यम से मैं आजकल की युवा पीढ़ी को यही संदेश देना चाहती हूँ कि अपनी शक्ति को बुरी लतों और बरबादियों के रास्ते

पर मत व्यर्थ गंवाओ बल्कि भगवान
जो स्वयं धरती पर आ चुके हैं उनके
मददगार बन कंधे से कंधा मिलाकर
उनके दिव्य कार्य में सहयोगी बनकर
अपने जीवन को हीरे जैसा बनाओ।
अंत में इतना ही कहूँगी –
युवा तुझे क्या हुआ?
विश्व परिवर्तन के कार्य में,
तुझे स्वयं शिव बुला रहा
दिव्य जीवन बना ले अपना
भाग्य से रह न अनछुआ
युवा तुझे क्या हुआ?

क्षमादान सच्चा समाधान

• **ब्रह्माकुमार महेश्वर, पारलाखमण्डी**

मनुष्य की चारित्रिक विशेषताओं में क्षमा-भाव एक विशेष गुण है। यदि कोई व्यक्ति भूल करता है चाहे मजबूरी-वश, चाहे अज्ञानता-वश, उस समय हमारा कर्त्तव्य हो जाता है कि हम उसकी ग़लतियों को चित्त पर धारण न करके पूर्ववत् प्रेम और सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हुए उसे हीनभाव या अपराधबोध की महसूसता न होने दें। इसको ही क्षमा-भाव कहा जाता है। लोग अपने प्रति क्षमा-भाव धारण करते हैं पर वास्तव में यह दूसरों के प्रति होना चाहिए। कई लोग क्षमा का ग़लत अर्थ उठा लेते हैं। मान लीजिए, अथक परिश्रम से मिला हुआ दस हज़ार रुपया हमारा कोई ले लेता है, तो क्या हम उसका नाम थाने में दर्ज न कराएँ? क्या मेहनत से प्राप्त धन गंवाकर ऐसे ही तमाशा देखते रहने का नाम क्षमा है? नहीं। उस खोये धन को प्राप्त करने का पुरुषार्थ आवश्यक है। लेकिन ध्यान यह रखना है कि पुरुषार्थ करते हुए भी उस निमित्त व्यक्ति की बुराइयों का चिन्तन न करें, अपने मन को दुखी, अशान्त न करें। यदि वह न्यायालय द्वारा सज़ा का भागी बनता है तो इसमें भी उसका कल्याण समाया हुआ है। पहली बात तो यह है कि उसे अपनी ग़लती का अहसास हो जायेगा और दूसरा फायदा यह होगा कि भविष्य में वह इस ग़लत आदत से छूट भी सकता है। शुभ भावना रखना हमारा फर्ज़ है।

क्षमा एक आन्तरिक भावना है। इसलिए मन में सभी के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, दिल का प्यार रखना ज़रूरी है। क्षमा करने से जीवन में दो चीज़ें अनुभव होती हैं – 1.चित्त सदा शान्त और प्रेममय बना रहता है, 2. बदले की आग में जलने तथा समय व्यर्थ गंवाने से बच जाता है।

समझदार को तो पता है कि वह जैसा करता है वैसा ही पाता है। किसी भी समस्या का समाधान वैर भाव, प्रतिशोध की भावना से नहीं लेकिन क्षमा और प्रेम से होता है। **गाली जब हमारे पास आती है तो अकेली ही होती है परन्तु जैसे ही हम प्रतिशोध में क्रोधवश बोलते हैं तो वह अकेली नहीं बल्कि अपने बाल-बच्चों सहित परिवार वाली बन जाती है। जैसे चिंगारी छोटी होती है लेकिन ज्वलनशील वस्तु के संपर्क में आने से उसकी शक्ति कई गुणा बढ़ जाती है। ऐसे ही आवेश के सम्पर्क में आने पर छोटी बात भी भयंकर रूप धारण कर लेती है,** महाविनाशकारी बन जाती है। तभी तो लोग आवेश से गुजरने के बाद पश्चाताप और ग्लानि महसूस करते हैं। इसलिए जब भी कोई इस प्रकार का दुष्कर्म करता है तो बाद में उसके मुख से यही निकलता है – पता नहीं, ऐसा घोर अपराध मुझसे कैसे हो गया?

यदि आनन्द की परिभाषा जानना चाहते हैं तो किसी की ग्लानि या निंदा को दिल में न रख, उसे क्षमा कर दें और भूल जाएँ। अपकारी पर भी उपकार करना क्षमा-भाव का सर्वश्रेष्ठ रूप है। जो दूसरे के अपराध को क्षमा कर, क्रोध को शान्त कर देता है उस पर परमात्मा भी प्रसन्न होते हैं। किसी समय उससे कोई भूल होने पर, उसे भी सहज रीति से क्षमा मिल जाती है। क्षमा भाव से जीवन में मधुरस आने लगता है जिससे वैर-भाव, कटुता आदि सब समाप्त हो जाते हैं। श्रेष्ठाचारी, निर्मल मार्ग पर जीवन यात्रा प्रारम्भ हो जाती है। क्षमा-भाव से, वैर-भाव पर जीत हो जाती है। क्षमा-भाव शाश्वत और दिव्य प्रेम का स्रोत है, जो आगे चलकर सुख-शान्ति के नूतन साम्राज्य में बदल जाता है जिससे क्रोध, घृणा, प्रतिशोध आदि सूक्ष्म दुर्गुण विनष्टप्राय और अस्तित्वहीन हो जाते हैं। ❖

सिम बनाम सोल

• ब्रह्माकुमार लोकपाल सिंह परमार, टीकमगढ़

पिछले सौ वर्षों में विज्ञान का अभूतपूर्व विकास हुआ है। विज्ञान द्वारा नित्य नये आविष्कार मनुष्य के सामने आये हैं। वर्तमान समय अनेक मानवोपयोगी आविष्कारों के बीच सबसे ज़्यादा प्रचलित है, 'मोबाइल फोन' और उसे संचालित करने वाली शक्ति है 'सिम'। इस लेख में हम 'मोबाइल तथा शरीर' और 'सिम तथा सोल' में समानताओं की चर्चा करेंगे।

जिस प्रकार मोबाइल एक से एक सुन्दर आकृति व विशेषताओं वाले हो सकते हैं परन्तु हरेक मोबाइल के अंदर डली हुई सिम का आकार एक ही होता है उसी तरह मानव शरीर भी भिन्न-भिन्न आकृति वाले होते हैं पर उनको संचालित करने वाली आत्माओं का आकार एक-समान ही होता है। ग्राहक का हिसाब-किताब सिम में रहता है, सिम जिस भी मोबाइल में डाल दी जाये, हिसाब उसी में ट्रांसफर हो जाता है। आत्मा भी शरीर छोड़ने पर चाहे किसी भी कुल, जाति, धर्म वाले शरीर में प्रवेश करे, कर्मों का हिसाब आत्मा के साथ ही जाता है।

मोबाइल फोन भिन्न-भिन्न सॉफ्टवेयर से बना होता है। हम जिस सॉफ्टवेयर पर क्लिक करते हैं वही सॉफ्टवेयर खुल जाता है। उसी प्रकार आत्मा के अंदर भिन्न-भिन्न प्रकार के अच्छे तथा बुरे संस्कार रूपी सॉफ्टवेयर भरे होते हैं। आत्मा जिस परिवेश में जाती है, उसका वही सॉफ्टवेयर खुल जाता है इसलिए अच्छे संग की सलाह दी जाती है।

कवरेज एरिया से बाहर

मोबाइल के द्वारा दूसरे व्यक्ति से संपर्क साधने के लिए दोनों का कवरेज एरिया के अंदर रहना आवश्यक है। प्रत्येक टावर अपनी किरणों द्वारा सिग्नल देकर अपने ग्राहकों को बात करने की सुविधा प्रदान करता है। परमात्मा शिव ने वर्तमान समय सारे विश्व में जगह-जगह अपने सेवाकेन्द्र रूपी टावर स्थापित किये हैं। जो आत्मायें इन टावरों के कवरेज क्षेत्र यानि संपर्क में रहती हैं उन आत्माओं को परमात्मा द्वारा भेजी जाने वाली पवित्रता, सुख, शान्ति की किरणों की अनुभूति होती रहती है। जो आत्मायें अपवित्र संकल्पों द्वारा विकर्म कर अपनी बुद्धि में व्यर्थ का किचड़ा जमा कर लेती हैं, वे कवरेज एरिया से बाहर हो जाती हैं। शक्तिहीन होने के कारण ये आत्मायें परमात्मा द्वारा निरंतर भेजी जाने वाली किरणों का अनुभव नहीं कर पाती हैं।

कॉल डिटेल सेवा

हम मोबाइल द्वारा जो भी बातें करते हैं उनकी निरंतर रिकॉर्डिंग ऑटोमेटिक मशीनरी में कॉल डिटेल के रूप में संरक्षित होती रहती है। इस सुविधा के द्वारा कब, किसने, किससे, क्या बात की, वह सारा पता चल जाता है। यह सेवा, सबूत बनकर अपराधी को सज़ा दिलाने के निमित्त भी बनती है।

मनुष्यात्मायें अनेक जन्मों में जो भी अच्छे या बुरे कर्म करती हैं, उनकी भी रिकॉर्डिंग ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी में संरक्षित होती रहती है जिसे कर्म डिटेल कहते हैं। महाविनाश के पश्चात् जब आत्माओं का हिसाब-किताब चूक्तू होता है तो धर्मराज इसी कर्म डिटेल के आधार पर सज़ा दिलवाते हैं।

सिम लॉक हो जाना

यदि कोई अपनी सिम का दुरुपयोग आपराधिक प्रकरणों या दूसरों को परेशान करने में करता है तो उसकी सिम लॉक कर दी जाती है। द्वापर युग से आत्माओं ने अपने शरीर का दुरुपयोग विकारों में, दूसरों को दुख देने में किया। अत: माया के पाँच विकारों ने आत्मा रूपी सिम को लॉक कर दिया और सिम के लॉक होते ही आत्मा का कनेक्शन सुख, शान्ति, पवित्रता के टावर से टूट गया और आत्मायें दुखी रहने लगी।

सुप्रीम टावर खड़ा है माउंट आबू में

संसार की समस्त धर्म, जाति, संप्रदाय की आत्माओं के लिए एक ही सुप्रीम टावर परमात्मा शिव पिछले 73 वर्षों से माउंट आबू में प्रेम, पवित्रता,

सुख, शान्ति, आनंद की शक्तिशाली किरणें सारे विश्व में फैला रहे हैं। लाखों आत्मायें उस सुप्रीम टावर से अपना कनेक्शन ले चुकी हैं और निरंतर अपने जीवन में ईश्वरीय शक्तियों की अनुभूति कर रही हैं। आप भी अपना कनेक्शन किसी भी नज़दीकी टावर (प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखा) से ले लीजिये। समय बहुत कम है, अभी नहीं तो कभी नहीं। ❖

ज़रूरत है रक्षा-कवच की

● ब्रह्माकुमारी रजनी, शिवसागर (आसाम)

समय को काल भी कहा जाता है, जोकि तीन प्रकार का होता है – भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल। यदि हम सकारात्मक चिन्तन करते हैं तो भूतकाल हमारा शिक्षक बन जाता है, वर्तमान खज़ाना और भविष्य उज्ज्वल हो जाता है। यदि नकारात्मक चिन्तन करते हैं तो भूतकाल भूतों की तरह डराने लगता है, जिससे वर्तमान दुखी-अशान्त होने लगता है और भविष्य अंधकारमय दिखाई देता है।

यदि वास्तविकता के धरातल पर देखें तो आज अधिकांश व्यक्ति नकारात्मक चिन्तन द्वारा अपने जीवन रूपी अमृत-कलश में विष घोल रहे हैं और स्वयं को मृत्यु की ओर धकेल रहे हैं। अतीत की अप्रिय घटनाओं का चिन्तन मानसिक तनाव व उत्तेजना की स्थिति पैदा कर देता है। परिणामस्वरूप, वर्तमान जीवन अनेक प्रकार की बुराइयों जैसे सिगरेट, शराब, ड्रग्स आदि के भंवरजाल में फँस जाता है और भविष्य नरकमय बन जाता है। ध्यान रहे, वर्तमान का हर क्षण भविष्य का निर्माण कर रहा है। समय का प्रयोग तीन प्रकार से किया जा सकता है। कोई तो समय का सदुपयोग करता है, कोई समय को पास करता है और कोई समय को नष्ट करता है। हमें ना व्यर्थ चिन्तन, वर्णन या व्यर्थ दृश्यों में समय पास करना है, ना पाप कर्मों में लिप्त होकर जीवन की अनमोल घड़ियों को नष्ट करना है बल्कि इन अमूल्य क्षणों को स्वकल्याण व विश्व कल्याण के कार्य में सफल कर सफलतामूर्त बनना है।

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। सुख-सुविधाओं के साधन मानव के पास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। परन्तु सुख-सुविधाओं के साथ-साथ विनाश का जो भयंकर राक्षस तैयार करके रख दिया गया है उससे मनुष्य सदा ही आतंकित रहता है। आपने वह कहानी अवश्य सुनी होगी कि एक बार चार मित्र जंगल में घूमने गए। वहाँ शेर की हड्डियाँ पड़ी देख, एक मित्र ने शेर का ढाँचा तैयार कर लिया, दूसरे ने उस पर माँस व खाल चढ़ा दी। तीसरे ने प्राण फूँकने की तैयारी कर ली। यह सारा नज़ारा चौथा मित्र शान्त भाव से देख रहा था। उसने सोचा, अपने ज्ञान के अभिमानवश अपने-अपने कार्य में जुटे इनको, इस समय शिक्षा देने से कोई लाभ नहीं होगा। तो वह धीरे-से एक पेड़ पर चढ़ गया। वहाँ से उसने देखा कि जैसे ही प्राण फूँके गए, शेर गरजने लगा और उसने तीनों को ही खा लिया।

बताया जाता है कि पहला बम जब हिरोशिमा नागासाकी पर गिराया गया तब गिराने वाला व्यक्ति विनाश के उस तांडव दृश्य को देखकर पागल-सा हो गया था कि हाय, यह मैंने क्या किया। परन्तु आज तो न जाने कितने ही अधिक शक्तिशाली बम तैयार हो चुके हैं। इससे सोचा जा सकता है कि संसार का भविष्य क्या होगा। परन्तु हमें यह सोच कर दुखी भी नहीं होना है बल्कि **उस चौथे मित्र की तरह समझदारी से काम लेना है और रक्षा का कवच धारण कर सकारात्मक चिन्तन द्वारा भविष्य उज्ज्वल करना है क्योंकि यह सृष्टि चक्र का अविनाशी नियम है कि हर बीज एक दिन विशाल वृक्ष का रूप धारण करता है और फिर बीज का निर्माण कर नए वृक्ष का सृजन करता है।** हर रात के बाद सवेरा आता है। वर्तमान समय की पुकार है कि आध्यात्मिक चिन्तन द्वारा हम मनोबल को बढ़ाएँ और आत्मिक शक्तियों को जागृत कर अपना व विश्व का भविष्य उज्ज्वल करें। आत्मिक शक्तियों को जागृत करने का सहज साधन है राजयोग जो किसी भी ब्रह्माकुमारी केन्द्र पर निःशुल्क सीखा जा सकता है। ❖

संस्कार परिवर्तन

• ब्रह्माकुमार भगवान, शान्तिवन

संरचना के मूल तत्वों को देखा जाये तो हरेक मानव शरीर जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश से ही मिलकर बना है। जब बीमारी आती है तो इन तत्वों के सूक्ष्म अंशों में असंतुलन के कारण ही आती है। जैसे पाचनशक्ति की कमी को जठराग्नि की कमी कहा जाता है। डायरिया को पानी की कमी माना जाता है। कमज़ोरी का कारण पृथ्वी तत्व की कमी है। एक शरीर में किसी एक तत्व की अल्पता या अधिकता है तो दूसरे में, दूसरे तत्वों की। इसी प्रकार स्वभाव में उग्रता, नकारात्मकता आने के मूल कारण भी मानव आत्मा में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि पाँच विकारों का व्याप्त हो जाना है। इन विकारों की मात्रा भी सभी में समान नहीं होती। इनसे शून्य आत्मा तो कर्मातीत कहलाती है। पर जब तक कर्मातीत स्थिति आये, पाँचों या पाँचों में से कुछ विकार समग्र रूप में या आंशिक रूप में आत्मा पर हावी रहते ही हैं। इन विकारों के वशीभूत हो, आत्मा जब बार-बार नकारात्मक व्यवहार करती है तो वो उसका बुरा संस्कार बन जाता है। इस बुरे संस्कार से छुटकारा पाना या इसे बदलना, इसे ही आध्यात्मिक पुरुषार्थ कहते हैं। जैसे जिस प्रकार की बीमारी होती है उस तरह की दवाई दी जाती है। जैसे बुखार होगा तो बुखार की ही दवाई (गोली) दी जाती है। यदि बुखार वाले मरीज़ को सिरदर्द की गोली देंगे तो बुखार जायेगा नहीं बल्कि बढ़ता ही जायेगा। इसी प्रकार विशेष प्रकार के संस्कार को खत्म करने के लिए भी विशेष प्रकार के पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है।

बुरे संस्कार की जाँच और उस पर जीत पाने का पुरुषार्थ

कई बार, एक विशेष संस्कार ज़्यादा प्रभावशाली विघ्न रूप में होता है। वह जीवन में बार-बार रिपीट हुआ होता है। ऐसा संस्कार बचपन से ही हमें तंग करना शुरू करता है। अत: सर्व महान और प्रथम पुरुषार्थ है ऐसे संस्कार को जड़ से ही निकाल देना। ऐसे कमज़ोर संस्कार की जाँच करें तथा उस पर जीत पाने का पुरुषार्थ करें। अगर अभी भी उस संस्कार के वश होते रहेंगे तो अंतिम समय यही हमें धोखा देगा। उससे बचने के कुछ उपाय अग्रलिखित हैं –

1. उस संस्कार के बारे में गहरा ज्ञान संग्रह करें कि वह कब-कब और क्यों प्रकट होता है।

2. उपलब्ध साधनों – प्रवचनों, मुरलियों आदि में से ऐसे ज्ञान-बिन्दु एकत्रित करें जो विशेष उस संस्कार को जीतने के संबंध में हों। जिन्होंने उस संस्कार को जीता है, उनके अनुभव सुनें और लिखें।

3. अगर वह संस्कार नहीं बदलता है तो अमृतवेले बापदादा से रूहरिहान करते समय खुले दिल से सुनाएँ ताकि बापदादा उस संस्कार के बारे में मुरली द्वारा, टचिंग द्वारा या किसी व्यक्ति द्वारा ज्ञानयुक्त प्वाइंट दें। ज्ञान-चर्चा करते समय भी उस संस्कार को मिटाने के लिए ही उससे संबंधित अनुभवयुक्त, धारणायुक्त, ज्ञानयुक्त प्वाइंट सुनें और प्रैक्टिकल में लाएँ।

4. उस संस्कार के बारे में हमारी खुद की ज़रा भी इच्छा *(interest)* नहीं होनी चाहिए। यदि उस कड़े संस्कार के अनुसार कहीं थोड़ा भी वायुमण्डल दिखाई पड़े तो वहाँ से किनारा करना आवश्यक है। इस संस्कार के बारे में हमारा वैराग्य हो, नफरत हो। जिस तरह रामायण में दिखाते हैं कि जब सीता के सम्मुख रावण आता था तब वह अपना मुँह फेर लेती थी। इसी तरह उस कड़े संस्कार से सम्बन्धित वातावरण से हमें अपना मुँह फिराना है, उसे देखते हुए भी न देखने का अभ्यास करना है। अगर हमारी इच्छा होगी तो उस संस्कार के वशीभूत हम होंगे ही। फिर

हमारे द्वारा विकर्म होगा जिससे कई दिनों तक हमारी अवस्था बिगड़ी रहेगी। जितनी कमाई की है, वह खत्म भी होगी। फिर पहले जैसी अवस्था जमेगी नहीं, अगर जमाना चाहेंगे तो भी बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। इसलिए इस कड़े संस्कार को रिपीट न होने देने का बहुत ध्यान रखना है।

5. ऐसे संस्कार को अपनी व्यक्तिगत डायरी में नोट ज़रूर करें। वह कहाँ से वार करता है, यह ध्यान भी दें। अगर इस मुख्य कड़े संस्कार पर जीत पायेंगे तो बाकी अन्य संस्कार अपने आप चले जायेंगे। जैसे रणभूमि में महावीर, महावीर के साथ ही युद्ध करता है। रास्ते में छोटी-छोटी सेना पर हमला नहीं करता है। इसी प्रकार हमें भी कड़े संस्कार को ही खत्म करना है। युद्ध में विजय तब कही जाती है जब मुख्य दुश्मन मर जाता है।

6. कड़े संस्कार पर विजय पाने के लिए उसकी जड़ को पकड़ना आवश्यक है। जड़ बहुत ही साधारण होती है। जब हम थोड़ा भी नियम-मर्यादा पर या पुरुषार्थ पर ध्यान नहीं देते तो वह जड़ अपनी तरफ आकर्षित करते हुए क्षणिक सुख-शान्ति का अनुभव कराती है। उस जड़ के आकर्षण को हम ज़रूरी समझ लेते हैं जिस कारण फिर उस मुख्य विकार की प्रवेशता हो जाती है। जैसे बारिश आने से पहले ठंडी हवा चलती है, बादल दिखाई देते हैं, बादलों की आवाज़ सुनाई देती है तो हम बारिश से बचने के लिए तैयारी कर लेते हैं। इसी प्रकार, जब माया (बुराई) आने के लक्षण दिखाई देते हैं तभी स्वयं को तैयार करना ज़रूरी है। उस समय बहुत ही सावधानीपूर्वक काम लेना चाहिए। उस समय हमें ईश्वरीय नियम मर्यादा के अंदर रहने का, पुरुषार्थी बन रहने का, योगयुक्त रहने का, ज्ञानयुक्त हो रहने का अटेन्शन रखना है ताकि माया का किसी भी प्रकार का वार हमारे ऊपर नहीं हो जाये। हम स्वयं आकर्षित न हो जायें। उस समय पुरुषार्थ के नये-नये प्लान बनाना, उमंग-उत्साह में रहना आवश्यक है।

7. वास्तव में विघ्न ही हमारी उन्नति का साधन हैं क्योंकि विघ्न आने पर ही कुछ नवीनता अपने पुरुषार्थ में कर सकेंगे। लेकिन अगर पुरुषार्थ में नवीनता नहीं करते तो विघ्न के कारण, जमी हुई अवस्था उखड़ जाती है। फिर ऐसा विघ्न बार-बार आकर बाधक बन जाता है। इसलिए विघ्न के समय कुछ प्रतिज्ञा या नवीनता करना आवश्यक है क्योंकि विघ्न के समय हमारी अवस्था उपराम, वैराग्यवृत्ति वाली होती है। इसी तरह विघ्नों से ही हमें कुछ सीखना आवश्यक है।

8. हर एक को यह जानना आवश्यक है कि मेरे अंदर कौन-सा ऐसा गुण, विशेषता या स्थिति है जो मेरे पुरुषार्थ को आगे बढ़ाती है। ऐसी स्थिति, गुण, विशेषता के नॉलेजफुल बनना आवश्यक है। उस स्थिति, विशेषता के हम मास्टर बन जायें। सहज पुरुषार्थी बनना है तो, जो स्थिति हमें अच्छी लगती है, उसका ही प्रयोग जीवन में करते चलें, हमें हर बात में सफलता मिलेगी। इससे ही अतीन्द्रिय सुख मिलेगा, पुरुषार्थ में आगे बढ़ेंगे, माया वार नहीं करेगी क्योंकि हमने कल्प पहले इस स्थिति का प्रयोग करके माया पर विजय पाई थी। इसलिए इस कल्प में भी यही स्थिति अच्छी लगती है। ऐसे पुरुषार्थ से हम सहज स्वउन्नति कर सकेंगे।

जो अपने संस्कार को एक धक्के से समाप्त करता है, वह राजा बन सकता है। अगर संस्कार बार-बार रिपीट होता है तो उदास रहेंगे और दास बनेंगे। तो आइये, हम सब मिलकर बीसों नाखूनों का ज़ोर लगाकर ऐसा पुरुषार्थ कर कड़े संस्कार को अंश सहित समाप्त करें।

मकान, दुकान और सामान आलीशान होने से पहले अपने विचारों को आलीशान बनाओ तो जीवन का सच्चा सुख मिलेगा।

संगठन चलाने की विधि

• ब्रह्माकुमार रामदास, गोरखपुर

कोई भी संगठन कुछ लोगों का समूह होता है। यूँ तो भीड़ भी लोगों का समूह है परन्तु भीड़ क्षणिक होती है और उसमें एकत्रित लोगों में एक-दूसरे के प्रति समर्पण-सहयोग का अभाव होता है जबकि संगठन बनता ही तब है जब पारस्परिक सहयोग और समर्पण हो। जहाँ अनेक लोग होंगे वहाँ संस्कार, विचार एवं व्यवहार भी अवश्य अनेक प्रकार के होंगे परन्तु इन अन्तरों को सहन कर, एक-दूसरे के प्रति सहयोग बनाये रखने से ही एकता की भावना पुष्ट होती है। संगठन बिखरने न पाए, एकता बनी रहे, इसके लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है –

1. आपसी संवाद – संगठन के लोगों को प्रतिदिन साथ बैठकर कुछ देर आपस में बातचीत अवश्य करनी चाहिए। आपसी बातचीत बन्द होने का अर्थ है पारस्परिक विश्वास की कमी और संदेह की बढ़ोतरी। पहले मन में संदेह का बीजारोपण होता है फिर विश्वास टूटता है, बातचीत बन्द होती है तथा साथ-साथ खाना-पीना बन्द, फिर साथ-साथ काम करना बन्द, अंत में साथ-साथ रहना भी बन्द हो जाता है, तत्पश्चात् बिखराव हो जाता है। अत: ध्यान रहे, संवादहीनता के कारण को यथाशीघ्र ढूँढकर उसका निवारण करें। अपनी बात कहें, दूसरे की बात सुनें और जो विवेकयुक्त हो उस पर अमल करें। अपनी ही बातों को सर्वोपरि सिद्ध करने का या मनवाने का हठ न करें। इससे विभेद और असंतोष पनपता है। अपनी बात साक्षी-भाव से लोगों के बीच रख दें, यदि उचित होगी तो स्वीकार की जायेगी। यदि नहीं भी स्वीकार होगी तो उससे व्यक्तिगत हानि तो होगी नहीं। दूसरों की उचित बात को मान लेना हमारा कर्त्तव्य है। जब हम स्वयं बदलेंगे तो संगठन स्वत: बदल जायेगा। स्वपरिवर्तन से समाज का परिवर्तन होता है।

2. अहम् एवं वहम का त्याग – मैं घर का मालिक हूँ; योग्य व्यक्ति हूँ, अधिक पढ़ा-लिखा हूँ; श्रेष्ठ कुल, खानदान का हूँ; मेरी योग्यता को ध्यान में रखकर, लोगों का कर्त्तव्य है कि वे मेरी बातों को मानें, मुझे सम्मान दें – यही अहम् व वहम सारे व्यवहार को बिगाड़ता है। कोई चाहे कितना ही योग्य क्यों न हो यदि वह अपनी योग्यता या महानता का मूल्यांकन स्वयं करता है तो दूसरों की दृष्टि में वह सम्मान का पात्र नहीं हो सकता। **यदि कोई सचमुच अधिक योग्य है तो उसे अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करते रहना चाहिए, लोग उसका आदर स्वत: करेंगे। बहुत बुरी प्रवृत्ति है अपना मान दूसरों पर लादना तथा दूसरों के मान को दबाने का प्रयास करना।** यदि हम दूसरे को आदर देना सीख लें तो अपनी बड़ी से बड़ी बात मनवाई जा सकती है और बड़े से बड़ा काम सहज करवाया जा सकता है।

3. स्वार्थ का त्याग – जीवन निर्वाह की आवश्यकता तो सबको है। इस आवश्यकता की पूर्ति लगभग सबकी होती रहती है। इसके लिए झगड़े भी प्राय: नहीं होते। झगड़े तो होते हैं मिथ्या स्वार्थपूर्ति के लिए, जब लोगों की दृष्टि आवश्कता पर न होकर वस्तु पर होती है। **वस्तु को अधिक महत्त्व दिया जाने लगता है तब आपस का प्रेम टूटता है, एकता खण्डित होती है, तकरार बढ़ती है।** देश की आजादी के पहले अनेक देशी राजाओं के आपसी स्वार्थ के कारण उनका विनाश हुआ और देश को गुलामी की मार झेलनी पड़ी। यदि ये राजे-महाराजे मिथ्या स्वार्थ एवं अहम् को महत्त्व न देकर पूरे भारत को महत्त्व देते तो मुट्ठी भर अंग्रेज़ भारत को गुलाम नहीं बना पाते। अत: संगठन के हित में स्वार्थ का त्याग आवश्यक है।

4. सामूहिक सहयोग भावना – हर व्यक्ति का अलग व्यक्तित्व होता है, अलग पहचान होती है, इसलिए हर किसी को अपने व्यक्तिगत

विकास का भरपूर अवसर मिलना चाहिए परन्तु व्यक्तिगत विकास, संगठन की सामूहिकता में बाधक न बने। हमारे हाथ में पाँच अंगुलियाँ हैं, सबका अलग-अलग अस्तित्व है और महत्त्व भी। कोई किसी से कम नहीं है परन्तु यदि पाँचों अलग-अलग ही रह जायें तो, सब अपना अलग-अलग विकास ही करते रहें तो एक सामान्य कार्य भी नहीं हो सकेगा। अकेली एक अंगुली से एक छोटा-सा तिनका भी नहीं उठाया जा सकेगा। सबकी सामूहिकता से भारी सामान भी आराम से उठाया जा सकता है। **संगठन को एकदम नज़रअंदाज़ कर व्यक्तिगत विकास बेईमानी है। कोई योग्य है तो वह योग्यता का प्रदर्शन एकांत में तो नहीं करेगा। उसकी योग्यता किसी संगठन में ही निखरेगी। एक संगठन नहीं तो दूसरा संगठन, जब संगठन में ही रहना है तो पहले वाले को क्यों छोड़ा जाये। ऐसा तो है नहीं कि उसमें सब बुरे और अयोग्य लोग ही हैं। यदि कुछ ग़लतफहमी है तो मिल-बैठकर उसे दूर किया जा सकता है।**

5. उचित मान-सम्मान – संगठन में रहने वाले सभी लोग एक जैसी योग्यता के नहीं होते हैं। कोई कम योग्यता वाला तो कोई अधिक योग्यता वाला होता है लेकिन हरेक को मान-सम्मान दिया जाना अनिवार्य है। किसी का तिरस्कार या अवहेलना न हो। जो अधिक योग्य है वह ज़्यादा महत्त्वपूर्ण तो है किन्तु जो कम योग्य है, वह महत्त्वहीन नहीं है।

किसी बड़े इंजन का कोई पार्ट अधिक बड़ा, अधिक मूल्यवान होता है और कोई छोटा तथा कम मूल्य वाला भी परन्तु जो छोटा है उसे महत्त्वहीन सोचना उचित नहीं है। उस छोटे के टूट जाने से वह बड़ा इंजन बंद हो सकता है। अत: अपनी-अपनी जगह पर सब महत्त्वपूर्ण हैं। जिसे हम कम योग्य समझते हैं कभी-कभी वह ऐसा काम कर लेता है जो बड़े कहलाने वाले भी नहीं कर सकते। **मन्दिर के कंगूरे पर चमकने वाला कलश जितना महत्त्वपूर्ण है, नींव में लगा हुआ अदृश्य पत्थर भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। अत: संगठन की एकता एवं सामूहिकता को बनाये रखने के लिए आवश्यक है छोटे-बड़े सभी सदस्यों को उचित मान-सम्मान दिया जाये।** किसी को यह आभास न होने पाए कि यहाँ मेरा तिरस्कार किया जा रहा है या मुझे उचित सम्मान नहीं मिल रहा है।

6. संपत्ति को महत्त्व न देकर मनुष्य को महत्त्व दिया जाये – संसार के सभी भौतिक धन मनुष्य के लिए हैं। संपत्ति बहुत हो पर साथ में रहने वाले लोगों के साथ व्यवहार ठीक न हो, तो धन मनुष्य को सुख नहीं दे सकता परन्तु व्यवहार सामंजस्यपूर्ण रहे तो थोड़ी वस्तुओं में गुज़ारा करते हुए भी व्यक्ति सुखी रह सकता है। इस तथ्य को लोग प्राय: कम समझते हैं इसलिए वे भौतिक धन को अधिक महत्त्व देने लगते हैं और आपसी व्यवहार को कटु बना लेते हैं। ऐसे लोग स्वयं उलझे रहते हैं और दूसरों को भी उलझन में डाल देते हैं। जब भी धन को अधिक महत्त्व दिया जायेगा, मनुष्य का अवमूल्यन होना निश्चित है और मनुष्य का अवमूल्यन करके कोई संगठन समृद्ध नहीं हो सकता। ❖

प्यार

ब्र.कु.प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला

सबसे अच्छा प्यार दोस्तो
और बुरी तकरार दोस्तो।
प्यार बिना यह जग है सूना,
प्यार का हो प्रसार दोस्तो।
प्यार तो सबसे बड़ी है नेमत,
प्रगति का आसार दोस्तो।
जीवन में खुशहाली आती,
प्यार है जीवन-सार दोस्तो।
प्यार से भाईचारा बढ़ता,
गाता मन मल्हार दोस्तो।
प्यार से बढ़ता है उजियारा,
जगमग हो संसार दोस्तो।
प्यार-मोहब्बत अच्छे गुण हैं,
प्यार का हो प्रचार दोस्तो।

मिलनसारिता

• ब्रह्माकुमारी नीता लालवानी, देवेन्द्र नगर (रायपुर)

इस संसार में हर एक वस्तु का अपना गुण होता है जैसे, बर्फ का गुण ठंडक, आग का गुण गर्मी इत्यादि। वस्तुओं के अलावा मनुष्यात्माओं के भी गुण होते हैं। परमात्मा तो गुणों के सागर हैं ही। गुण तो बहुत सारे हैं परन्तु उनमें से मुख्य रूप से मनुष्य के 36 गुणों का गायन है, ये गुण उसका शृंगार हैं जिनको संपूर्णतया अपनाने के बाद वह देवपद को प्राप्त करता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे समाज में विभिन्न स्वभाव वाले मनुष्यों से व्यवहार में आना होता है। सभी का स्वभाव एक-सा नहीं होता, ऐसे में संबंधों में मैत्रीभाव और मधुरता बनाये रखने के लिये मिलनसारिता मिश्री का काम करती है। यह गुण अपने साथ अन्य गुणों को भी समाये हुए है। जो आत्मा मिलनसार होती है वह विनोदप्रिय, सहनशील, निर्माणचित्त आदि गुणों से भी सुसज्जित होती है। उसमें प्रतिकूल परिस्थिति में स्वयं को ढालने अर्थात् मोल्ड करने की शक्ति होती है। अब्राहम लिंकन के जीवन से मिलनसारिता का एक सुन्दर उदाहरण स्मृति में आ रहा है।

बात उस समय की है जब अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति नहीं बने थे लेकिन एक अच्छे नेता के रूप में प्रख्यात हो चुके थे। एक बार वे किसी महत्त्वपूर्ण सभा में भाषण दे रहे थे। उस सभा में लिंकन के गाँव का एक किसान भी बैठा था। लिंकन की किसी बात पर अत्यधिक प्रसन्न होकर वह किसान मंच पर जा पहुँचा और भाषण दे रहे लिंकन के कंधे पर हाथ रखकर बोला – ''अरे अब्राहम! तू तो बहुत होशियार हो गया है। तेरी बात सुनने के लिये लोग टिड्डियों के दल की तरह आये हैं। शाबाश!'' इससे पहले कि सभा के आयोजकगण नाराज़ होकर उस किसान को कुछ कहते, लिंकन ने बड़ी आत्मीयता से उस बूढ़े किसान से हाथ मिलाया और सम्मानपूर्वक मंच पर लगी अपनी कुर्सी पर बिठाते हुए कहा – ''चाचाजी, आप यहाँ विराजें, घर पर सब प्रसन्न तो हैं ना?'' इस प्रकार बातें करके लिंकन ने परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को मोल्ड किया अर्थात् मिलनसारिता के गुण द्वारा वृद्ध का सम्मान भी किया और आयोजकों की नाराज़गी भी दूर की।

यह प्रसंग हमें मिलनसार बनने के लिये प्रेरित करता है। जैसे पानी जिस बर्तन में डाला जाता है उस जैसा बन जाता है, वैसे ही मिलनसार व्यक्ति भी दूसरों को सहज ही अपना बना लेता है। इसके लिये उसके अन्दर दूसरों के प्रति शुद्ध अर्थात् आत्मिक प्रेम होना चाहिये। सरल स्वभाव, मन की सच्चाई और सफाई, निकट संपर्क में आने का गुण मिलनसारिता कहलाता है। मिलनसार व्यक्ति दूसरों की सेवा और सहायता के लिए सदैव तैयार रहता है। साथ ही दूसरों की आलोचना न कर उन्हें सम्मान देने के स्वभाव वाला होता है। शिव बाबा भी कहते हैं, पहले क्षमा करो फिर शिक्षा दो। मिलनसार व्यक्ति का कोई शत्रु नहीं हो सकता क्योंकि उसको मित्र बनाने का जादू आता है। ऐसे गुण वाला व्यक्ति किसी के लिये भय का कारण नहीं होता। वह अपने व्यवहार से हर एक का दिल जीत लेता है। लोग उससे मिलकर मानसिक राहत व सुख-शांति का अनुभव करते हैं। ऐसी आत्मा से खुशी के प्रकंपन निकलते ही रहते हैं। उसके संपर्क में आने वाली आत्मा भी खुशी के खज़ाने से संपन्न बन जाती है। ❖

परिस्थितियाँ आने का अर्थ है कोई सुअवसर मिलने वाला है। परिस्थितियों का सामना करने से ही अनुभव रूपी मक्खन प्राप्त होता है।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 worldrenewal@bkivv.org